पहला राजा

जगदीशचन्द्र माथुर

राजकमल प्रकाशन
नयी दिल्ली पटना

इलाहाबाद वाले जवाहरलाल नेहरू
की याद मे
जिनका
मेरी पीढी के जवानो पर
बेअन्दाज असर पडा था।

पात्र-परिचय

सूत्रधार	नटी
	सुनीथा
गर्ग	दासी
अत्रि	
शुक्राचार्य	
सूत	
मागध	
पृथु	
कश्यप	
	अर्चना
	उर्वी
पहला मुखिया	
दूसरा मुखिया	
तीसरा मुखिया	
अन्य ग्रामीण	

कई मित्रो ने मुझसे पूछा है—'आपका नया नाटक ऐतिहासिक अथवा पौराणिक है या यथार्थवादी ?'

हरेक नाटककार को अपने अनुभव के दायरे म से ही समस्याएँ और परिस्थितिया वर्चैन करती हैं और उन्हे उजागर करने के लिए वह पात्र और प्रसग खोजता है। उन्हे ही वह मच की परिधियो म बठाता है।

यही मैंने इस नाटक मे किया है।

मुख्य पात्र और प्रसग मैंने वैदिक और पौराणिक साहित्य स लिये हैं। लेकिन इसलिए ही यह नाटक पौराणिक नही कहा जा सकता। पष्ठ-भूमि के कुछ अश और कुछ सूत्र मोहनजोदडो—हडप्पा सभ्यता की खुदाइयो से सम्बद्ध हैं। पर इसी स यह नाटक ऐतिहासिक नही हो जाता। कुछ सवाद वतमान बोलचाल की भाषा मे ह, गीतो पर लोक शैली की छाप है। पर केवल इसीलिए नाटक को यथार्थवादी रचना नही ठहराया जा सकता।

वैदिक और पौराणिक साहित्य, पुरातत्व एव इतिहास, लोकगीत और बोलचाल—इन सभी मे मुझे प्रतीको के उपकरण मिले ह उन समस्याओ को प्रकट करने के लिए जिनसे मैं इस नाटक म जूझता रहा हूँ।

वे समस्याएँ सवथा आधुनिक है, वे उलझनें मेरा 'भोगा हुआ यथाथ' है।

तो यह नाटक न पौराणिक है, न एतिहासिक, न यथार्थवादी। यह तो एक 'माडन एलिगोरी'—आधुनिक अन्योक्ति—का मचीय रूप है।

मैं कोई नयी बात नही कर रहा हूँ। बर्नार्ड शॉ (जान ऑव आक),

क्रिस्टोफर फ्राइ (द फस्ट बॉन), डी एच लॉरेंस (डेविड), जॉं एनुल्हि (ट्रोजन वार) ब्रेरट (गेलिलियो) इत्यादि अनेक आधुनिक नाटककारा ने प्राचीन पात्रा, प्रसगो और परिस्थितियो के माध्यम से रगमच पर सम सामयिक समस्याआ का विश्लेपण किया है। एक अत्याधुनिक इटैलियन फिल्म डाइरेक्टर—पासोलिनी—ने हाल ही म ईसा की जीवनी और वातावरण के ज़रिये वतमान जीवन की असगतियो पर प्रकाश डाला है।

पहला राजा' भी ऐसा ही एक प्रयोग है।

अत्यन्त सकोच और विनम्रता के साथ मैं सहृदय दशका और पाठको के समक्ष यह प्रयोग प्रस्तुत कर रहा हूँ, क्योंकि यद्यपि बढती आयु और तजुर्बों के बावजूद प्रयोग करने की धुन मुझ पर हावी रही है, तथापि आवेश और उल्लास की वह झझा मुझे अब उडा नही ले जाती जिस पर सवार होकर मैं चुनौती के साथ अपनी रचनाओ के नयेपन की घोपणा करता था।

नयी दिल्ली — जगदीशचन्द्र माथुर

जून, 1969

अक एक

(प्रकाश सूत्रधार पर केन्द्रित है और सूत्रधार दशको को सम्बोधित कर रहा है।)

सूत्रधार

चाद और सितारा को छूने के लिए उतावले तुम्हारे वेगवान घोडा के खुरो को जहाँ मे अपनी यात्राओ के लिए अपार शक्ति मिलती है उम धरातल से अपरिचित नादान वैज्ञानिको आओ मरे साथ नतमस्तक हो जाओ !

उल्लास और विलास, वदना और व्यथा, रगीनिया और मातम की जिन उत्ताल तरगो और महीन फुहारो पर तुम्हारी कल्पना के इन्द्रधनुप विहँसते ह उन्हे उछालनेवाले हाथो से अपरिचित नादान कवियो, आओ, मेरे साथ अजलिबद्ध हो जाओ !

क्षण मे युगो को आसमान और अतल शून्य मे निश्शब्द गजन करनेवाली तुम्हारी जिज्ञासा की बिजली जिन घनघोर घटाआ की गहराइयो से ब्रह्माण्ड की ओर दौडती है उन घटाओ की जननी से अपरिचित नादान

दार्शनिको आओ, मेरे कण्ठ से कण्ठ मिलाओ।

आओ मेधा, कल्पना और मनन के मानसपुत्रों, आओ, हम सब मिलकर वन्दना करें

(नटी का प्रवेश)

नटी

भला नाटक शुरू करते समय आजकल कोई प्रार्थना करता है ?

सूत्रधार

माना कि तुम आधुनिका हो—मॉडर्न हो, लेकिन याद रखो

नटी

कि तुम रूढिबद्ध सूत्रधार, कजर्वेटिव डाइरेक्टर का बाना पहने मच पर उतरे हो। मगर हे मेरे आर्यपुत्र, नक्कारखाने मे तूती की आवाज की तरह तुम्हारे अकेले स्वर म प्रार्थना पर कौन कान देगा ?

सूत्रधार

नटी, इसीलिए तो मेरा आह्वान है—मेरी पुकार है, वैज्ञानिकों, कवियो और दार्शनिको को कि वे आये और मेरे साथ नतमस्तक, अजलिबद्ध समकण्ठ होकर

नटी

खूब ! तुम समझते हो कि आजकल का साइटिस्ट, पोएट और फिलॉसफर तुम्हारे साथ परमात्मा की वन्दना करेगा—परमात्मा जिसकी हस्ती अब मखौल की चीज भी नहीं रह गई है ? खूब !

सूत्रधार

मैं परमात्मा की स्तुति नही कर रहा था।

नटी

तो फिर, वह शक्तिबिन्दु

सूत्रधार

जिसके झटके स स्पूतनिक और एपोलो चन्द्रमा पर उतर रहे हैं।

नटी

वह जलराशि

सूत्रधार

जिसके उल्लास मे कवि की कल्पना उमडती है

नटी

चिन्तन की वे घटाए

सूत्रधार

जिनके उठान मे ही ज्ञान की बिजली तडपती है। कहा है उनका निवास ? कहा है उनका उदगम ? कहा है

नटी

कहा है उनका निवास ? कहा है उनका उद्गम ?

सूत्रधार

इस सवाल की उमडती नदी पर बार बार जवाबो के पुल बने और बार बार टूट।

नटी

फिर भी सवाल की धारा जारी है।

सूत्रधार

और जवाब भटक रहा है, जसे आज से लगभग चार हजार बरस पहले हुआ था।

नटी

कहाँ ?

सूत्रधार

ब्रह्मावत म।

नटी

ब्रह्मावत ?

सूत्रधार

यमुना के पश्चिम मे सरस्वती और दपद्वती नदियो का प्रदश।

नटी

सरस्वती और दपद्वती, जिनकी अब यादही बाकी रह गयी है।

सूत्रधार

लकिन तब ? तब, ब्हुत कुछ हुआ ब्रह्मावत म बहुत-कुछ अत्याचार, क्रांति, हत्या और

(गम्भीर वाद्य सगीत)

(प्रकाश सूत्रधार और नटी से हटकर मंच के मध्य भाग पर फैल जाता है और दीख पडता है ब्रह्मावत मे स्थानेश्वर के निकट एक टीला मंच के सबसे पीछे के भाग मे, सीढियाँ और उनके ऊपर एक चबूतरा। उस पर मनुष्य के शरीर की लम्बाई की एक मंजूषा पर आपादमस्तक कपडे से ढँका शव। सुनीथा दाहिनी ओर से आती है और सीढियो से चढकर मंजूषा के बायीं ओर खडी हो जाती है, प्रकाश उसका अनुसरण कर उस पर टिक जाता है। सकल्प मुद्रा, निष्करुण नेत्र। उसके पीछे पीछे दासी जिसके हाथ मे दीपक है।)

सुनीथा दीपक इधर रख दो।

(दासी मंजूषा के एक तरफ दीपक रख देती है।)

सुनीथा चेहरे पर से कपडा हटा दो!

(दासी शव के चेहरे पर से कपडा हटाती है। वेन का चेहरा दीख पडता है। सुनीथा के मुख के भीतर से खिंचा सा सशब्द नि श्वास मानो सुषुप्त व्यथा का सकपण बोल उठा हो।)

सुनीथा आज अमावस्या है?

दासी देवी!

सुनीथा अट्ठाईस दिन और रात! फिर भी कितना सजीव लग रहा है शव!

दासी अद्भुत! चमत्कार है आपके लेपन म!

सुनीथा (हाथ ऊपर उठाकर। बदला स्वर, मानो किसी और लोक से बोल रही हो) ओ मृत्युलोक के देवताओ! लाओ, मेरे प्रतापी पुत्र वेन के प्राण वापस करो! मैंने उसकी देह पर यह चमत्कारपूर्ण लेपन कर, उसे वापस आनेवाले प्राण के योग्य बना रखा है आओ, लौट आओ वेन की आत्मा! (कोमल स्वर) लौट आओ मेरे बेटे!

दासी रोज, आप यही कहती हैं, देवी, रोज ! पर कोई नयी बात नही घटती !

सुनीथा आज अच्छी तरह देखो ! कही कोई धडकन है, कोई हरकत ?

दासी (शव पर हाथ फेरती हुई) कही भी तो नही ! पर देवी ! पहले भी मैंने आपसे कहा था कुशा की यह रस्सी गरदन म स निकाल दें।

सुनीथा तुम समझती हो कि लौटनेवाले प्राण रस्सी के इस फन्दे को लाघ नही सकेंगे ! तुम्हारा भ्रम है। पर लाओ आज इसे निकाल ही दो।

(दासी गरदन मे से कुशा की रस्सी निकालती है।)

दासी मुनियो ने कुशा की इस रस्सी म हत्यारे मन्त्र फूके थे देवी ! (रस्सी सुनीथा को देती है।)

सुनीथा (रस्सी को लटकाती है, प्रकाश मे फन्दे की क्रूर चमक) हत्यारे मन्त्र ! नही। हत्यारे तो मुनियो के वे हाथ थे जिन्होंने अँधेरी रात म सोते हुए नरसिंह की गरदन को इस रस्सी से दबाकर उसका वध किया। (रुककर) लो, दासी ! पहाडी की तलहटी म जाकर गढा खोदकर इसे रोप दो।

दासी रोप दू ? (लेती है।)

सुनीथा हा। अगर सच ही इस कुशा मे मन्त्रो का अभिशाप है तो ब्रह्मावत की इस धरती पर अभिशापो का जगल फलेगा।

दासी अभी भी फैल रहा है। डाकुओ ने आश्रमो और यज्ञशालाओ पर धावा बोला है। कोई बचानेवाला नही है।

सुनीथा (मानो अदृश्य सम्बोधन) सावधान शुनाचार्य ! अभी तो बहुत कुछ भुगतना है तुम्हे और तुम्हे, गर्ग, अत्रि और तुम्हारे अनेक कुचक्रियो को ! (दासी से) खडी क्या है ? जाओ !

दासी देर लगेगी ! आप

सुनीथा मैं यही रहूँगी ! और सुनो ! यह दीपक ले जाओ ! (जोर से) ले जाओ !

(दासी का धीरे से प्रस्थान)

अंधेरे के घोमले मे प्राणो के पछी वापस भेजो, मृत्यु-लोक के दवताओ !

(अँधेरा । प्रकाश पुन नटी और सूत्रधार पर)

नटी

प्राणो की वापसी के लिए मौत मे विनती ? यह कैसी विचित्र वात !

सूत्रधार

कोई आश्चय नही नटी ! मौत एक कारीगर है जिसके हाथो म जि दगी की खदान से निकले खुरदरे पत्थर भी चमक्दार हीरे वन जाते है।

नटी

गलत बात ! कारीगरी मौत की नही, कारीगरी है उन लोगा की जबान की जो श्रद्धाजलियो और गुणगान की पालिश मे मरे हुओ की मिट्टी को भी सोना बना देते हैं।

सूत्रधार

नही, नटी ! जबान कारीगर की छनी नही। जबान तो सबसे गहरी चोट करनेवाला हथियार है।

नटी

तुम्हारा मतलब है कि मुनियों की जबान—उनके शापो और मन्त्रो—से ही अत्याचारी वेन की मौत हुई, उस रस्सी से उसका गला नही घोटा गया ?

सूत्रधार

यह मैं कब कहता हू ? लेकिन याद रखो, जैसे आजकल, वैसे ही तब शाप और मन्त्र यानी भाषण और नारो की ओट म ही खड्ग और फन्दा के कारनामे होते थे।

नटी

पर कभी कभी य हथियार खुट्टल भी तो हो जाते हैं।

सूत्रधार

हुए थे ! हथियार खुट्टल हुए थे। मुनियो का गरजनेवाला महासागर किनारे की बालू पर छोड गया, महज चन्द लकीरें जिन्ह हवा की हलकी हथेली ही मिटाने लगी !

(प्रकाश पुन मचपर। अँधेरे की ओट मे एक ओर से गग और दूसरी ओर से अत्रि का प्रवेश)

गग कौन, शुक्राचाय ?

अत्रि मैं अत्रि हू, गग।

गग यही तो मिलना था। तलहटी के निकट ! शुक्राचाय मिले ?

अत्रि नही !

गग कुछ काम बना ?

अत्रि नही ! दक्षिण और पूव के जनपदो मे गाव गाव की खाक छान आया। अनेक मुखियो से मिला। पर कोई कान नही देता। आश्चय है कि अत्याचारी का मुर्दा पूजन का फूल बन गया है।

गग वही बात ! पश्चिम के ग्रामीण मुझसे बोले—आप ही लोगो ने वेन की हत्या की है, आप ही अपने आश्रमो और यज्ञो की रक्षा का भी इन्तजाम कीजिए।

अत्रि हत्या ? लोक के धिक्कार से जो खुद ही चूर चूर हो चुका था उसे हुकारा की हवा स उडा देना क्या हत्या है ?

बाल सच ही आपके वे नारे दिगदिगन्त की रोषमयी हुकार थे।

(अत्रि की नारे उठानेवाली मुद्रा की अनुकृति करते हुए) 'दुष्ट दुराचारी

अत्रि नरक का अधिकारी !' हा, मैं नारा उठाता और भीड गरजकर जवाब देती ! 'ओ वेन नराधम'

बाल 'दुष्कम तेरे यम !'

अत्रि जैसे घी की आहुति पाते ही यज्ञ की ज्वाला भडक उठती है ! मैं पूछता—हवन सस्कारो मे जाति के प्राण है—देवताओ की कृपा हमारा अमत है। आय जाति क रक्त की शुद्धता ही हमारी मयादा है। जो उस प्राण का घातक है, उस अमत का शोषक है, उस मयादा का ध्वसक है, क्या ऐसा निलज्ज पापी जिन्दा रहेगा ? कभी नही ! कभी नही ! कभी नही ! सारा आसमान गूज उठता !

(क्षण भर को मौन)

गग और अब ? कितना सुनसान है !

अत्रि हमारी आवाज के इशारे पर सागर मे ज्वार नही आता।

गग मानो जनता के मन मे ही सन्नाटा छा गया हो।

अत्रि एक बार पहले भी ऐसा हुआ था। पर तब हम मुनियो ही के मन म सन्नाटा छा गया था।

गग कब ?

अत्रि याद कीजिए !

गग (सोचता सा) बीस बरस पुरानी बात क्या ले बैठे, अत्रि ?

अत्रि इसी दुराचारी वेन न उस समय सबके सामन अपन पिता अग को अपमानित किया, लाछित किया ! और हम मुनियो के मुह से आवाज नही निकली। रातो रात अग ब्रह्मावत छोडकर हिमालय म त्रिगत के जगलो की ओर न जान कहा गायब हो गये! पर हम मुनियो न चुप्पी साध ली।

गग हम कैसे उस झगडे म पडते ? बाप-बेटे म तनातनी तो हुई उस अनाय निषाद नारी के कारण

अत्रि वह जिसे वेन न पहल अपनाकर बाद मे दूध की मक्खी की

तरह फेंक दिया और आत्महत्या करने पर मजबूर किया !

(शुक्राचार्य का प्रवेश)

शुक्राचार्य लेकिन उसने आत्महत्या की नहीं अत्रि !

गर्ग शुक्राचार्य ! आप आ गये !

शुक्राचार्य आ तो पहले ही गया था, पर कुछ देर आप दोनों की बात सुनता रहा !

अत्रि छिपकर सुनना भृगुवंशियों की पुरानी आदत है।

शुक्राचार्य मानता हूँ कि हम भृगुवंशी सावधानी का सहारा लेते हैं, और आप आत्रेय लोग आवाज का !

गर्ग उसने आत्महत्या नहीं की तो गयी कहाँ ?

शुक्राचार्य हिमालय में निगत के उसी जंगल में जहाँ अंग गये थे ! अंग ही ने उसे शरण दी। उसे और उसके गर्भ में वेन की सन्तान को !

गर्ग वेन की निगली सन्तान ! आर्यकुल के रक्त का दूषण ! यह आप क्या कह रहे हैं शुक्राचार्य ?

अत्रि कोई सबूत ?

शुक्राचार्य मैंने ही तो उसे वहाँ रातों रात भेजा था ताकि वेन की निषाद सन्तान ब्रह्मावर्त से दूर ही रहे। पर आज सुना !

गर्ग क्या ?

शुक्राचार्य कि हिमालय में निगत से एक वीर योद्धा ब्रह्मावर्त में आया है।

गर्ग निषाद ?

शुक्राचार्य नहीं गोरे रंग का आर्य, लेकिन उसके साथ है काले रंग का एक निषाद।

अत्रि किसने कहा यह आपसे ?

शुक्राचार्य सूत और मागध ने।

गर्ग सूत मागध और यहाँ ? सरस्वती तट पर हमारे पीछे आश्रम की देखभाल छोड़कर यहाँ आ गये हैं ?

अत्रि मैं पहले ही जानता था। सूत मागध से स्तुतियाँ कराइए,

प्रशस्ति कराइए ! लेकिन भला आश्रम की रक्षा मे उनका मन लगता ?

शुक्राचार्य सुनिए ! वे आये है क्योकि हमारे आश्रम पर सरस्वती पार के दस्युओ,—डाकुओ का जबरदस्त आक्रमण हुआ है।

गर्ग आश्रम पर आक्रमण ?

शुक्राचार्य भीषण आक्रमण !

अत्रि तब हम लोग यहा क्या कर रहे है ? हमे तुरन्त लौटना चाहिए तुरन्त !

गर्ग हा लौट चलिए शुक्राचार्य ! मुझे अर्चना की चिन्ता है।

अत्रि गर्ग अप्सरा की कन्या को अपनी बेटी की तरह रखकर आपने आश्रम की रक्षा और भी मुश्किल कर दी है।

गर्ग मैं तो स्वय चाहता हूँ कि उसका विवाह जल्दी किसी आर्य युवक से हो जाय ! पर डाकुओ का यह आक्रमण !

शुक्राचार्य चिन्ता न करें। सूत मागध कहते थे कि आश्रम से भाग कर अर्चना भी इधर ही कही आयी है। मैंने उन्हे उसी की खोज मे भेजा है।

अत्रि कैसी विकट भँवर मे पड गये है हम लोग ! आश्रम पर आक्रमण, इधर अत्याचारी वेन का मुर्दा और फिर जनता की उदासीनता !

शुक्राचार्य कभी कभी खतरनाक भँवर के निकट ही बचानेवाला किनारा होता है, आचार्य ! मुझे रास्ता दीख रहा है।

अत्रि क्या ?

(नेपथ्य मे कुछ हलचल। दौडते पैरों मे पायल की झनकार।)

गर्ग सुनिए, सुनिए ! पायल की आवाज ! क्या, क्या अर्चना यहा आ गयी ?

शुक्राचार्य कौन है ?

(भागते और हाफते हुए दासी आती है और उसका पीछा करते हुए सूत और मागध।)

गर्ग — अरे यह स्त्री तो

सूत — रोकिए, रोकिए इस जादूगरनी को।

मागध — (तेजी से दूसरी तरफ जाकर दासी का रास्ता रोकता है।) मन्त्रों के जाल में हमें फांसने की तैयारी कर रही थी यह स्त्री !

(तीसरी तरफ मुड़ने की कोशिश करती मगर गर्ग और अत्रि रास्ता रोक लेते हैं।)

सूत — आचार्य उसके हाथ में से वह रस्सी ले लीजिए।

दासी — नहीं, नहीं रस्सी नहीं दूंगी मैं।

शुनाचार्य — हठ मत करो नारी ! हम लोग पांच हैं, तुम अकेली।

(दासी विवश हो चारों तरफ देखती है। शुनाचार्य आगे बढ़कर रस्सी छीन लेते हैं।)

दासी — यह जबरदस्ती है।

शुनाचार्य — (रस्सी को देखते हुए) वही, वही रस्सी ! सूत मागध, कहाँ मिली तुम्हें यह स्त्री ?

मागध — तलहटी के नीचे गड्ढा खोदकर दस रोप रही थी।

सूत — और भीषण मन्त्रों का उच्चारण कर रही थी।

शुनाचार्य — क्या ?

दासी — एक दिन आपके भीषण मन्त्रों से यह रस्सी अभिशप्त हुई थी मुनिवर !

अत्रि — तो यही है सुनीथा का प्रतिशोध !

दासी — आप जो समझें !

गर्ग — इस रस्सी की जगह यदि देवी सुनीथा अपने पुत्र की अस्थियाँ को गाड़ने का आदेश देती तो सबका कल्याण होता।

दासी — आपके मुख से 'देवी' शब्द अटपटा लगता है, आचार्य !

शुनाचार्य — वाचाल दासी, अपनी स्वामिनी को सूचना दो, हम लोग उनसे मिलने के इच्छुक हैं।

दासी — (किंचित व्यंग्य से) स्वागत है, पुरुषमेध यज्ञ के होताओं का !

अत्रि — उद्दण्ड नारी !

शुक्राचार्य (अत्रि को टोकते हुए) किस मार्ग से चलना होगा तुम्हारी स्वामिनी से मिलने ?

दासी आप लोग तो अमावस्या के अँधेरे में पहले भी रास्ता नाप चुके हैं मुनिवर !

शुक्राचार्य आज हमारा रास्ता दूसरा ही है दासी ! सुनीथा से कहो हम उनसे झगड़ने नहीं आये हैं निवेदन करने आये हैं ! इस रात ही बातचीत का अवसर दें तो कल्याण होगा ! जाओ ! और सुनो ! उनसे कहो कि कुशा की यह रस्सी अब शाप नहीं, यश का प्रतीक होगी !

(दासी जाती है। थोड़ी देर मौन)

अत्रि यह सब क्या है शुक्राचार्य ! हम लोग सुनीथा से निवेदन करने तो नहीं आये हैं ! हम तो किसी युक्ति से उस दुर्विनीत नारी से पापाचारी वेन के शव को लेने आये हैं।

शुक्राचार्य अवश्य ! लेकिन उससे पहले सूत और मागध का समाचार तो सुन लीजिए।

गर्ग अर्चना का क्या हुआ सूत ?

सूत सब लोग तितर बितर हो गये। कुमारी अर्चना को इस दिशा में ही जाते देखा था।

मागध डाकू थे या जंगल की आग ! देखते ही-देखते हमारा आश्रम किसी जलती हुई बरहम हथेली में सिसकने लगा।

सूत असंख्य पैरों से उड़ी धूल का घटाटोप फैल गया और उसमें यज्ञशाला की धूम ब्रह्म में मुमुक्षु की आत्मा की तरह लीन हो गयी !

अत्रि चमत्कार है कि तुम लोग जीवित कैसे बच गये।

सूत उसी शूर का पराक्रम था आचार्य !

मागध वह और उसका साथी तड़ित की भाँति आसमान के किसी कोने से उतरे।

सूत उनके घोड़े इन्द्र का वज्र, अग्नि की लपट थे। उनके बाण वरुण की प्रचण्ड लहरें ! डाकू वहीं के वहीं ढेर होकर गिरने

लगे और कुछ भाग निकले। हमारी साँसें वापस आयी।

शुक्राचाय तुमने उसे रुकने के लिए नही कहा।

सूत : कहा! वह बोला कि उसे शीघ्र स्थानेश्वर पहुचना है, और

अत्रि और

मागध और सुनीथा से मिलना है।

गग कितना मालम है उसे ?

मागध यही कि वेन मर गये हैं।

अत्रि और कुछ ?

सूत शायद और कुछ भी। कहता था कि उसे आदेश है स्थानेश्वर पहुचने मे देर न लगाये।

गग आदेश किसका ?

सूत यह नही बताया। जल्दी म था। हमने सोचा हम लोग छोटे माग से आकर आपको उनके पहुचने से पहले ही सूचना दे दें।

शुक्राचाय मानते है गग, कि डूबती नाव के लिए वह माँझी देवता के वरदान की तरह उतर आया है ?

गग दोनो म कौन है हमारा माझी ?

शुक्राचाय क्या यह भी सोचने की बात है ?

सूत आचाय, शुभ्र वण का वह आय वीर हर तरह हमारा नया शासक होने योग्य है।

मागध उसके चेहरे स शासक का तज टपकता है।

अत्रि नया शासक! नया भूपति! सुना आपने गग? और मेरे उन भाषणो की याद क्या होगी जो मैंने वन के सहार के समय दिये थे ? कि शासक का पद बेकार है, मनुष्य सब बराबर हैं कि धम ही शास्ता है और हम ऋषि मुनि ही धमपद के प्रदशक ह ? क्या होगे व ओजस्वी शब्द ?

गर्ग जनपद के लाग कहते है कि जिन हाथो न वन का वध किया, क्या वे ही नये शासक का निमाण नही कर सकते ?

अत्रि निर्माण? हमे निर्माण से क्या मतलब? हम तो क्रान्तिकारी हैं। हम नेता हैं कुम्हार नही।

शुक्राचार्य हां, हम नेता हैं। इसलिए हमे फिर आवाज उठानी होगी। और आचार्य अत्रि, आपके शब्दो मे झझा का वेग है और इन्द्रधनुष का आमन्त्रण भी।

सूत हम आपकी आवाज बनेंगे, आचार्य अत्रि हम, सूत और मागध! हम नये शासक की स्तुतियां गायेंगे, उसकी महिमा को गगनव्यापी घोषित करेंगे।

मागध हमे शब्द दीजिए आचार्य, हम उन्हे पछी बनाकर सारे आसमान मे उडायेंगे।

अत्रि शब्दो के पछी! हसो की पांत या चील की उडान?

शुक्राचार्य इस समय, हसो की पांत।

अत्रि क्या वेन के यशगान के लिए हमने कुछ कम धवल हस उडाये थे? (स्तुति की भगिमा) 'हे नरेश्वर हे सुविज्ञ, हे परमप्रतापी अगपुत्र वेन! आप ही धर्म का रक्षण कर सकते है। आप ही की छाया मे निश्चिन्त होकर हम लोग परमेश्वर का ध्यान भजन कर सकते हैं।" और याद है उसने क्या जवाब दिया था? उसने कहा था—'मूर्खो, किस परमेश्वर की बात करते हो? मैं ही तुम्हारा स्वामी हूँ, तुम्हारा परमेश्वर हूँ। सब देवता मेरे शरीर मे निवास करते हैं। इसलिए अपने सभी कर्मों द्वारा एक मेरा ही पूजन करो! सब यज्ञो को छोडकर मुझे ही बलि समर्पण करो।"

गर्ग क्या कोई ऐसा उपाय नही जिससे हम शुरू से ही नये शासक को निरकुश होने का अवसर ही न दें?

शुक्राचार्य मैंने एक उपाय सोचा है।

गर्ग उपाय? सुनें!

शुक्राचार्य हम नये शासक को बाधेंगे।

अत्रि इसी कुशा की रस्सी से जिसमे वेन को

शुक्राचार्य कुशा की रस्सी भी काम आयगी।

व धन होगा विधान का।

गर्ग — विधान कौन देगा ?

शुक्राचार्य — हम देंगे विधान। हम ब्रह्मावर्त के मुनि और ब्राह्मण। हम जो जनता के नेता हैं हम जो अपनी तपस्या और साधना के कारण शासक का पथप्रदर्शन कर सकते हैं। शासक को हमारे साथ शर्तें करनी होंगी!

गर्ग — शर्तें ? तब तो यह एक सौदा है।

शुक्राचार्य — हां सौदा! मैं इसी नतीजे पर पहुंचा हूँ कि राजा की सत्ता की बुनियाद एक सौदा होनी चाहिए, परमेश्वर की देन नहीं।

अत्रि — राजा! क्या नया नाम देने से शासक के मन में ईश्वर बनने की लालसा नहीं उठेगी ?

शुक्राचार्य — नहीं! राजा यानी अनुरंजक! हम जिसे राजा घोषित करेंगे वह हमारा अनुरंजक और धर्म का रक्षक होगा, इस लिए नहीं कि उसमें ईश्वर की शक्ति, या देवताओं के तेज का स्वरूप है, बल्कि इसलिए कि उसके अधिकारों की बुनियाद होगा हमारा दिया हुआ विधान, हमारी बांधी गयी शर्तें।

अत्रि — और इन बंधन के बदले उसे क्या मिलेगा, शुक्राचार्य ?

शुक्राचार्य — हम ऋषि मुनियों के मन्त्रों की शक्ति, हमारे आशीर्वाद, हमारा परामर्श।

सूत — आपके आशीर्वाद ही उसके पराक्रम का परिधान होंगे।

मागध — उदार पौरुष के अलंकार

मन — उसके यश के किरीट!

अत्रि — क्या इतना ही काफी है ?

शुक्राचार्य — इसलिए कि हमारे विधान का आधार ही उसकी सत्ता, उसकी बाद की पीढ़ियों का भी सिंहासन होगा!

गर्ग — सत्ता! राजा की संतान! आप कुछ भूल रहे हैं शुक्राचार्य!

शुक्राचाय नहीं गग। सूत मागध, जाओ और अचना को खोजकर यही ले आओ !

गग मैं स्वय जाता हूँ, अचना की खोज मे !

(बाहर आहट)

सूत ठहरिये आचाय ! कोई आ रहा है !

(सूत मागध पाश्व मे जाकर देखते हैं।)

मागध वही है ! हमारा रक्षक ।

सूत हमारा मुक्तिदाता ! अकेला। (दोनो पीछे हटकर खडे हो जाते हैं)

(पृथु का प्रवेश)

शुक्राचाय आयुष्मान् स्वागत है !

पृथु इतनी रात बीते कौन मेरी प्रतीक्षा कर रहा है ?

शुक्राचाय वे जिनकी यज्ञवेदियो को सरस्वती तट पर आपके पराक्रम ने ठण्डी होने से बचाया ! मेरा नाम शुक्राचार्य है, आयुष्मान् !

अत्रि और मेरा अत्रि ! पुष्प की सुगध की तरह आपके आने से पहले ही आपकी यशोगाथा न हमे प्रफुल्लचित्त कर दिया ।

गग गग का आशीर्वाद ग्रहण करें आयुष्मान् ।

शुक्राचाय हम चारो ही नही, सारा ब्रह्मावत आपकी प्रतीक्षा म है ।

पृथु आप लोगो के सामन मैं नतमस्तक हूँ ! किन्तु ब्रह्मावत मे तो मुझे कोई नही जानता ! पहली बार हिमालय से इधर आना हुआ ।

सूत (मागध के साथ आगे बढकर) हम दोनो के लिए तो आप चिर परिचित हो गये है वीरश्रेष्ठ !

पृथु (पहचानता हुआ) आप आप दोनो ? (कुछ रुककर) सरस्वती तट से यहा तक कोई गुप्त माग है क्या ?

गग डाकुओ के हमलो से जिन्ह हमेशा आशका बनी रहती है उन्हें या तो गुप्त मार्गो की पहचान रखनी होती है या फिर आप जैसे धनुर्धारी वीर का सरक्षण प्राप्त करना होता है।

पथु सरक्षण ! वह तो बहुत मामूली-सी सेवा थी और हमारा कर्तव्य था ! मगर डाकुओं के दूसरे गिरोहों से सावधान रहना होगा आप लोगों को। लौटते वक्त मैं आश्रमों के आसपास के क्षेत्र मे एक चक्कर लगाऊँगा

धुम्राचार्य आपको अब लौटना नही है।

पृथु जी ? (हल्की हँसी) यदि आप मेरी तरह हिमालय की गोद मे ललकती कुलूत घाटी के निवासी होते तो क्या ऐसा कहते ?

अत्रि कुलूत म देवप्रस्थ के आयकुल के वशज हैं आप ?

पृथु जी !

गर्ग बडा प्रतिष्ठित आयकुल है वह।

पृथु प्रतिष्ठा ? आचाय प्रतिष्ठा कुल की नही उस मनोरम प्रदेश की है जहा विपाशा की धारा मे वर्फीली चोटियों का सगीत उमडता है !

अत्रि हिमालय का सगीत लोरी है, आपका पौरुष क्या ब्रह्मावर्त की चुनौती भरी रणभेदी को अनसुनी करेगा ?

पथु मैं किसी चुनौती से नहीं भागता, आचाय ! हिमालय मुझे सपने नहीं शक्ति देता है।

गर्ग तो फिर ?

पथु राजमाता सुनीथा को उनकी थाती सौंपकर फिर सरस्वती तट पर आपके आश्रमों और अग्निहोत्रों की रक्षा के लिए जितने दिन आवश्यकता होगी ठहरूँगा।

अत्रि थाती ? किसकी ?

पथु अपने गुरु की।

अत्रि कौन थे आपके गुरु ?

पृथु त्रिगत के जगल के किनारे जहा विपाशा नदी तग कन्दराओं की गहराइयों से बाहर निकलकर अठखेलियां करती है वही मेरे श्रद्धेय गुरु अग की कुटी थी।

मुनि और सूत मागध (शुक्राचाय के अतिरिक्त सभी एक साथ और साश्चय) अग !

गग अग आपके गुरु ! !

पृथु आप लोग चौंक क्यो गये ?

शुक्राचाय हम लोग चौंके नहीं है, पृथु लेकिन एक बात आप शायद न जानते हो कि अग वन से पहले ब्रह्मावत के शासक थे।

पृथु जानता हूँ। बहुत पुरानी बात है।

शुक्राचाय और यह कि एक रात वह चुपचाप बिना किसी को बताये चले गये ?

पृथु ऐसा सुना था।

शुक्राचाय यह भी सुना होगा कि अग ने एक गभवती निषाद युवती को आश्रय दिया था।

पृथु क्या वह सब दुहराना जरूरी है ?

शुक्राचाय इसलिए कि आप सुनीथा के सामने इसकी चर्चा करेंगे !
और और हमे यह कभी मजूर नही होगा।

पृथु क्या ?

शुक्राचाय कि सुनीथा उस निषाद स्त्री की सन्तान को वन की सन्तान माने !

पृथु निषाद सन्तान ! मेरा साथी, मेरा गुरुभाई, कवप !

गग उसका नाम कवप है ?

पृथु जी ! बाहर घोडा के निकट खडा है। बुलाऊँ ?

शुक्राचाय तनिक ठहरिये।

पृथु आप उससे मिलें तभी समझेंगे वह क्या है ! उसी की विलक्षण प्रतिभा के कारण मैंने आश्रम मे दो घोडो से एक सेना का काम लिया !

अत्रि प्रतिभा ? निषादपुत्र म प्रतिभा ?

पृथु गुरुवर अग कहा करते थे कवप की काली चमडी के नीचे एक शुभ्र धारा बहती है।

गग शुभ्र धारा या या वणसकर !

अत्रि क्या आपको इसमें कोई बुराई नहीं जान पड़ती कि ब्रह्मावत पर एक वणसंकर राज्य करे ?

पृथु आपको शासक चाहिए ! वह मिल रहा है।

शुक्राचार्य शायद आप नहीं जानते कि आपको यहाँ भेजने का असली उद्देश्य अग के मन में क्या था ?

पृथु आपका मतलब ?

शुक्राचार्य पृथु, आप यहाँ जिम्मेदारी सम्हालने के लिए भेजे गये हैं दूसरों को जिम्मेदारी सौंपने के लिए नहीं।

पृथु ऐसा कोई संकेत मेरे गुरु ने नहीं दिया !

शुक्राचार्य इसलिए कि वे आपकी अंतिम दीक्षा को आपसे गुप्त रखना चाहते थे।

पृथु मुझे सोचना होगा !

अत्रि आयुष्मान पृथु, आपने अभी कहा था कि आप चुनौती से मुह नहीं फेरते। हमारा निमन्त्रण भी आपके लिए एक चुनौती है।

पृथु निमन्त्रण ?

शुक्राचार्य हा ! (घोषणा के स्वर मे) हम आपको आमन्त्रित करते है कि आप हमारे शासक बनें। (मौन) आप चुप हैं ?

अत्रि (आह्वान का स्वर) ब्रह्मावत पर आज डाकू और लुटेरे छा रहे है सरस्वती नदी के उस पार दस्युओं के जिन नगरो को आर्य योद्धाओं ने कभी का मटियामेट कर दिया था वहीं से दस्यु लोग सिर उठाने लगे है, हमारे यज्ञ और अग्निहोत्र भ्रष्ट किये जा रहे है, वेदमन्त्रों की ध्वनियाँ जिन कण्ठो से निकलती थीं उन्हें दबोचा जा रहा है ! क्या आपका हिमालय भी अछूता रह सकेगा ?

पृथु (सोचता सा) वायदे और चुनौती के बीच किसे वरूँ ?

शुक्राचार्य यह तो आपने उस समय ही तय कर लिया था जब सरस्वती तट पर डाकुओं के बीच आप कूद पड़े थे !

पृथु मेरे साथ कवष भी उन लहरों से जूझ पड़ा था। आचार्य,

मुझे मंजूर है, पर कवष मेरे साथ रहेगा!

शुक्राचार्य हमारी भी कुछ शर्तें हैं।

पृथु क्या?

शुक्राचार्य उचित समय पर आपको मालूम हो जायेंगी। आप तलहटी पर थोड़ी देर प्रतीक्षा करें ये दोनों, सूत और मागध, जब आपके पास पहुँचें तो आप और कवष उनके साथ आ जायें।

पृथु कहाँ?

शुक्राचार्य सामनेवाली जिस पहाड़ी पर सुनीथा वेन के शव को रखे हुए है उसके पीछे एक झरना है। वहीं! चुपचाप पहुँचना होगा।

पृथु और आप लोग?

शुक्राचार्य हम लोग चलते हैं सुनीथा से मिलने।

पृथु मुझे भी तो राजमाता सुनीथा से मिलना है।

शुक्राचार्य अवश्य! आपकी मुलाकात का प्रबन्ध कर लेने के बाद ही हम आपके पास सूचना भेजेंगे।

(पृथु को छोड़कर सबका दूसरी दिशा मे प्रस्थान)
(पृथु—विचारमग्न—उस ओर जिधर मुनि लोग गये हैं बढ़ता है, कि दूसरी ओर से कवष का प्रवेश। सावला सा शरीर आदिम जाति का सा चेहरा, लेकिन बदसूरत नहीं वरन, तेजस्वी मुखमुद्रा।)

कवष कुछ पता चला?

पृथु (चौंककर) कौन? कवष! हाँ पता चला! वे तीनों मुनि मिल गये जिनके आश्रम से हमने डाकुओं को खदेड़ा था। वे लोग ही राजमाता सुनीथा से हमारी मुलाकात करायेंगे।

कवष तुम जानते हो पृथु कि मुझे मिलने की जल्दी नहीं है। यदि गुरुदेव की अन्तिम आज्ञा न होती तो

पृथु (मानो कुछ याद आया हो) गुरुदेव!

कवष क्या न हम लौट चलें? हम दोनों साथ ही रहकर बहुत-

कुछ कर सकते हैं।'

पृथु मैं तुम्हारे साथ रहूँ या तुम मेरे साथ रहो—क्या एक ही बात है?

कवष अजीब सवाल है तुम्हारा!

पृथु शायद हम लोग साथ रह सकें!

कवष सच! तो फिर मैं तुम्हारे साथ वापस चल सकूगा?

पृथु नहीं! शायद मैं ही यहाँ रहूँ!

कवष तब तो उसका कहना ठीक था! उर्वी ने कहा था कि पृथु मुझसे दूर भागना चाहते हैं।

पृथु छोडो उस चर्चा को! चलो तुम्हे बताता हूँ कि हम क्या करना है।

कवष मुझसे पूछो तो ब्रह्मावत मे लोग बातें ज्यादा करते हैं काम कम! त्रिगत मे हम लोग पानी और वाणी को जमा करके रखते थे जिससे न धरती सूखे न मन तरसे। याद हैं ये शब्द?

पृथु उर्वी ने और कुछ कहा था?

कवष मुझे लगता है वह यहाँ आ पहुँची है।

पृथु असम्भव!

कवष जहा मैं खडा था वहा से कुछ दूर पेड के पीछे से एक नारी की आकृति मुझे दीखी! मैंने पुकारा पर वह गायब हो गयी?

पृथु (बीती बातो की याद मे खोता हुआ) क्या तुम्हे भी भ्रम है कि वह सामने खडी है और होता अनजाने ही लुप्त हो गयी?

कवष नही मैंने जो देखा ठीक था।

पृथु (उसी धुन मे) और मन भटकने लगता है! मानो जिस वक्ष के बसेरे म से पछी उडा था लौटने पर उसे कटा हुआ पाकर भटकने लगे।

कवष (पृथु की भुजा को छूता हुआ कोमल स्वर) पृथु!

पृथु (कवष की ओर हठात मुडकर) तुम मेरे साथ रहोगे न ?
चाहे जो हो ? चाहे मैं मैं, तुमसे धोखा भी करूँ ?

कवष यह दूसरा बढगा सवाल तुम्हारे मुह से आज निकला है !
पृथु ! आओ हम लोग लौट चलें।

पृथु नही ! लौटने की राह बन्द हैं ! हम बहुत-कुछ करना
है ! चलो, तुम्हे बताता हूँ !
(बायीं तरफ प्रस्थान। प्रकाश नटी और सूत्रधार
पर।)

नटी

एक पहली पूछू ?

सूत्रधार

एक नही दो पूछो।

नटी

बिना रोशनी के कौन-सी छाया पडती है ?

सूत्रधार

दुविधा ही वह छाया है जो आकाक्षा के आगन मे बिना
रोशनी के पडती है।

नटी

बिना पलक मुदे कौन सी नीद आती है ?

सूत्रधार

अपने आपको दिया हुआ भुलावा ही वह नीद है जिसमे
पलक झँपते नही।

नटी

दोष मत दो, सूत्रधार, दोष मत दो ! कभी-कभी नादानी की ढलानों पर मसूबों की धारा बहते बहते उस कुण्ड मे पहुँच जाती है जहा अपने आपको दिये हुए भुलावे ही चक्कर मारते हैं।

सूत्रधार

जैसे ?

नटी

जसे कौओ के नादान जोडे ने घोसला बनाया और अण्डे दिये। क्या मालूम कि किसी अनातनामा कोयल के अण्डे उसमे कब के मिल गये ?

सूत्रधार

नादानी भी एक मुखौटा है, नटी ! नक्ली चेहरो की दुनिया म असल एक ही है, भुलावे, दूसरा को या अपने आपको !

(प्रकाश मच के अग्र भाग से हटकर पिछले शेष भाग पर टिक जाता है जहाँ सुनीथा वेन के शव के पास खडी है। पास ही दासी। दाहिनी ओर तीनों मुनि!)

सुनीथा मैं जानती थी कि आप लोगा को लौटना होगा। मैं जानती थी !

अत्रि देवी सुनीथा आपकी इस दशा से हम दुखी हैं।

सुनीथा मैं आपके तरस की भिखारिणी नहीं हूँ।

गर्ग इतनी मेहनत के बाद आपने क्या पाया ?

सुनीथा मैंने क्या पाया, यह आपके सामने प्रत्यक्ष है ! आपके

मन्त्रा न जिस टूक टूक किया, मेरे तन्त्र ने उसे जोड दिया है।

अत्रि हमारे मन्त्र जनता की आवाज थे !

सुनीथा खोखली है वह आवाज शासक के तेज के बिना ! एक अन्धा धक्का देकर आप लोगा ने उस तेजपुज को बिखेरा।

मैंने फिर से बीन-बीनकर उसे एकत्र किया है। यही तेजपुज ब्रह्मावत को बचायगा। इसी वेदी के अगारे, इसी अग्निहोत्र का तजस्वी धुआं !

शुक्राचाय देवी सुनीथा, हम आपसे तक करने नही, समझौता करने आये हैं ! वेन का शव हमे द दीजिए।

सुनीथा इसलिए कि आप इसके मास को गीधो के सामने डाल सकें और इसकी हड्डियो को अग्नि मे !

शुक्राचाय नही ! बल्कि इसलिए कि जो कुछ आप अपने तन्त्र और लेपन के चमत्कार स कर पायी हैं उस हम पूरा कर सकें।

सुनीथा आप लोग पूरा करेंगे शुक्राचाय ? आप जो नष्ट ही करना जानते हैं बनाना नही ?

शुक्राचाय मेरी बात सुनें, सुनीथा ! आपने अपने चमत्कार से वेन के शरीर की वदी तैयार कर दी है—वही रूप, वही आकार ! परन्तु उसका तेज कहा है ?

सुनीथा इसी शरीर म वह तेज व्याप्त है। (दूसरी ओर मुडकर मानो किसी का आह्वान करती हो) आ, मत्युलोक के देवताओ, कण कण म व्याप्त उस तेज को फिर स प्रज्ज्वलित कर दो।

शुक्राचाय देवी, आपके मृत्युलोक के दवता प्राण लेना जानते हैं देना नही !

सुनीथा (मुडकर सहसा) आप प्राण वापस ला सकेंगे ?

शुक्राचाय नही !

सुनीथा तब ?

शुक्राचाय आपने ही कहा है कि वेन की इस देह मे ही उसका तेज छिपा पडा है ! हम उस तेज को प्रज्ज्वलित करेंगे !

सुनीथा कैसे ?

शुक्राचार्य उसके शरीर का मन्थन करके।

सुनीथा मन्थन ?

शुक्राचार्य हां, जैसे देवताओं और असुरों ने सागर को मथा था, वैसे ही हम वेन की देह को मथकर उसके तेजोमय अंश को आविर्भूत करेंगे।

अत्रि वही तेजोमय अंश जो एक जीवित व्यक्ति की सन्तान में प्रकट होता है।

सुनीथा सन्तान !

शुक्राचार्य देवी हम आपके चमत्कार को व्यर्थ नहीं होने देना चाहते ! हम अनेक यत्न करते हैं ! देह का मन्थन सबसे बड़ा यज्ञ होगा और हमें विश्वास है कि वेन का राजसी तेज प्रकट हो सकेगा !

सुनीथा सागर के मन्थन से अमृत भी निकला था, विष भी, सुन्दर भी, असुन्दर भी।

गर्ग हो सकता है वेन का तामसी अंश भी प्रकट हो।

अत्रि हम उसके राजसी अंश को ही ग्रहण करेंगे।

शुक्राचार्य आज्ञा दें देवी हम लोग पीछे निर्झरिणी के जल में शुद्ध होकर इस अनुष्ठान को पूरा करें !

(तीनों मुनि शव के दूसरी ओर एक एक कर खड़े होते हैं। सूत और मागध का एक पर्दा लिये हुए प्रवेश।)

शुक्राचार्य और यदि सवेरे तक हमारा प्रयास सफल हुआ तो आप और ब्रह्मावर्त की जनता सूर्योदय के साथ ही यहीं वेन के ज्योतिर्मय तेजोमय अंश का भी अभिनन्दन करेंगी।

(सूत और मागध पटी—चित्रयुक्त पर्दे को शव और मुनियों के आगे तान देते हैं। धीरे धीरे प्रकाश कम होता जाता है। सुनीथा भूमि पर दण्डवत् प्रणाम मुद्रा में। थोड़ी देर बाद दासी उसे उठाती है। अंधेरा। एक विराट वाद्य संगीत जिसमें यत

ध्वनि का सकेत है[1] धीरे धीरे प्रकाश पुन नटी और सूत्रधार पर पडता है।)

नटी

सूखी चट्टानो के समुद्र मे शीतल झरने का द्वीप

सूत्रधार

घनी, कोलाहलपूर्ण बस्तियो के रेगिस्तान के बाद एकान्त के वन भरे निकुज

नटी

बालपन की नादान हाथापाइयों के बाद पहले स्पर्श की मीठी सिहरन

सूत्रधार

रोजमर्रा की बमर्मा बातो की धारा के बीच सहसा मनचाहे मौन के पत्थरो का शोर।

नटी

क्या ये भ्रान्तियाँ छलावे हैं ?

सूत्रधार

नही जिन्दगी की लडी मे जो कुछ भी बिधा वह एक बराबर दाना है न छोटा न बडा।

(अर्चना का प्रवेश। उसके पीछे पीछे उर्वी)

अर्चना और तुम उनकी खोज मे यहाँ तक चली आयी ?

उर्वी कोई गलती की ?

अर्चना गलती कोई करता नही, हो जाती है। पर तुम्हारे मुखडे

1 जैसा आकाशवाणी की मदनदहन गीत रचना का प्रारम्भिक अश।

से कोई अचना क्या चाहेगा ?

उर्वी मेरा मुखडा ? (हँसी) यह खुरदरी चमडी जिस पर धूल की परत जमी है !

अचना खुरदरी तो धरती भी है ! और धरती ही की भाति तुम्हारे मुखडे म रस छलकता है !

उर्वी मैं धरती को हथेली की तरह जानती हूँ कहा उसका रस है, कहा उसके खजाने ! इसीलिए तो चाहती हूँ कि वे दोनो धरती को लौट चलें !

अचना इसीलिए ! क्या सिफ इसीलिए ?

उर्वी तुम नही समझोगी इन बातो को !

अचना क्यो ?

उर्वी कभी प्रेम किया है ?

अचना सुना है विवाह के बाद प्रेम आप ही फूट पडता है।

उर्वी इसीलिए विवाह की प्रतीक्षा मे हो ? नादान !

(मानो कोई टोह मिली हो। गुनगुनाने लगती है।)

अचना (साश्चय) गा रही हो !

उर्वी तुम्हारी नानी का गीत ! सुनो (गाती है)

सोने की थाली सजोय बैठी हूँ मैं।
पर कोई आता नही
आता नही जीमनवाला
सोने की थाली और य दमकती कटोरिया
भरा है जिनम लबालब रस का सागर
पर कोई आता नही, आता नही
रस का लालची, छूता नही !
यह छुवन जो पल म गगरी को छलका दे—
कब से बैठी हूँ सँजोये सोन की थाली
पर कोई आता नही
आता नही।

अचना सुनो ! मेरे साथ रहोगी ?

उर्वी दासी बनकर या सखी ?

अचना सखी !

उर्वी तुम्हारे माता पिता मानेंगे ?

अचना जिसके माता पिता नहीं है उसकी बात अधिक मानी जाती है।

उर्वी किसी ने तुम्हें गोद लिया है ?

अचना हा, अब तो मैं एक मुनि कन्या हूँ।

उर्वी तब तो तुम्हें आश्रम म होना चाहिए। यहाँ स्थानश्वर म क्या कर रही हो ?

अचना मजबूरन आना पडा !

उर्वी समझी !

अचना भला सुनू तो कि तुम क्या समझी ?

उर्वी यही कि यहा स्थानश्वर म प्रियतम को पाना सम्भव हो सकेगा।

अचना अपनी बात मुझ पर ढाल रही हो ?

उर्वी अपनी बात !

अचना तुमने पूरी बात बतायी नहीं ! जिनकी खोज मे तुम इतनी दूर स ब्रह्मावत म आयी हो क्या उन दोना मे तुम्हारा नेह है ?

उर्वी इस भी गलती मानती हो ?

अचना समझ म नहीं आता !

उर्वी नेह भी एक खोज है। मेरे मन का मेघ दो ताला के दपनो मे थोंकता है।

अचना और उस मालूम ही नहीं कि कहा बरस ! यह एक ही रही ! ब्रह्मावत म तुम्हारी उलझन दूर हो जायगी सखी !

उर्वी ब्रह्मावत म तो उलझनें बिछी पडी है। मरे हुए राजा का शरीर डाकू और लुटेरो की आधियाँ, और तरह तरह के दाव पेंच !

अर्चना बहुत कुछ जानती हो तुम !

उर्वी ब्रह्मावत बहेलिया का जाल है दो नादान कबूतर उसम कही फँस न जायें !

अचना समझी ! तो कबूतरी उन्ह रिझाकर लौटान आयी है ! क्या वे यही है ?

उर्वी शायद यही कही ही हैं।

अचना तब तो तुम्ह भी कुछ देर इस जाल म फँसना होगा ! (किंचित हँसकर) जाल !

उर्वी उतनी ही देर जितना हम तीनो के लौटने के लिए जरूरी है !

अचना बडी बेताब है मेरी सखी।

(सहसा उर्वी के चेहरे पर तनाव जसे कोई उन्माद चढ रहा हो।)

उर्वी वह जो मैं देख पा रही हू अगर तुम देख पाती तो

अचना यह क्या ! तुम्हारी आँखो मे यह कैसी छाया ! यह कैसी टकटकी !

उर्वी (मानो उसके शब्द कहीं दूर से आ रहे हों) मैं उर्वी हूँ ! मैं धरती की धडकन सुन रही हूँ, मैं दूर क्षितिज के किनारे उठती तेज और कडकडाती धूप की रेखा देख रही हूँ जिसकी ज्वाला म ब्रह्मावत के ताल-तलैये, नदी-नाले सूख जायेंगे।

अचना मुझे डर लगता है तुम्ह यो देखकर !

उर्वी (मानो सुना ही नहीं) और बेचारी धरती सिकुड जायेगी ! धरती जिसकी व्यथा मैं जानती हूँ !

अचना (उर्वी को छूते हुए) तुम तुम कहाँ हो ?

उर्वी (स्पश के कारण मानो वापस आती हुई) मैं (अत्यन्त सुकोमल स्वर मे) बुरा तो न मानोगी ?

अचना क्या।

उर्वी सुनो, मैं तुम्हारी सखी नही बन पाऊँगी।

अचना उन दो पुरुषो के बीच तुम्हारी उलझन दूर हो जाय तब भी नही ?

उर्वी वह बात नही। मेरी सखी एक ही है, धरती ! धरती जो नशे की तरह मुझम घुल मिल जाती है और ब्रह्मावत म धरती पर जो बीतनेवाला है उस मैं झेल नही पाऊँगी नही नही

(दाहिनी ओर प्रस्थान)

अचना ठहरो ! उर्वी उर्वी !

(हाथ उठा रह जाता है।) कभी गीत कभी उन्माद ! तभी तो इसे सखी बनाऊँगी, कैसे भी हो ! कैसे भी हो !

(बायीं ओर से आपादमस्तक वस्त्र से अपना बदन छिपाये एक पुरुष का प्रवेश।)

पुरुष अचना ! अर्चि !

अचना (चौंककर घूमती हुई) कौन ! (भयमिश्रित आश्चय का उच्छवास)

पुरुष डरो मत ! (मुह पर से कपडा हटाता है।)

अचना पिताजी ! (आगे बढती हुई) आप ! मैं कब स खोज रही हूँ।

गग जानता हूँ। आओ मेरे साथ।

अचना कहा ?

गग अभी बताता हूँ।

अचना पर पर

गग (अचना को उसी ओर ले जाते हुए जिधर से आया था) चलो ! तुम्हारी जरूरत है।

(प्रस्थान। प्रकाश मच से हटकर सूत्रधार और नटी पर टिक जाता है।)

सूत्रधार

एक दिन महादेवजी पार्वतीजी को साथ लिये आकाश में घूमते जा रहे थे। औरतजात पार्वती मौके बेमौके सवाल पूछकर बेचारे महादेव की नाक में दम कर देती थी।

नटी

अगर मर्द उलझनें पैदा न करें तो औरतें सवाल पूछें ही क्या?

सूत्रधार

नीचे मानवलोक में किसी जगह धर्म की चर्चा हो रही थी। पार्वती ने त्रिशूल पकडकर महादेव को रोका और बोली—हे पशुपतिनाथ, मनुष्य तो चेतनशील प्राणी है। सोच विचार सकता है, भला बुरा देखकर हर मौके पर सही कर्तव्य पहचान सकता है। तब उसे धर्म की आवश्यकता क्या है?

नटी

धर्म! कौन सा धर्म?

सूत्रधार

महादेवजी ने जवाब दिया—देवी, मनुष्य चेतनशील होने के साथ-साथ पशु भी है। एक ओर वह सूझबूझवाला, विवेकी और चिन्तनशील प्राणी है दूसरी ओर वह जानवर भी है हिंसक, चेतनशून्य, सहजवृत्ति पर चलनेवाला।

नटी

कभी आकाश की सीमाहीन गुफा में विचरनेवाला ज्ञानी, कभी पत्थरों की अंधी और तंग गुफा में भरमनेवाला जानवर।

सूत्रधार

महादेवजी ने समझाया,—हे गणेशजननी, जानवर होने के कारण मनुष्य को किसी न किसी प्रकार के बाहरी अनुशासन की आवश्यकता है ऐसे बाहरी इशारे जिनके सहारे वह चले या रुके ऐसे पैमाने जिनमे नाप-नापकर निर्णय ले सके एसे मूल्य जिन्हे वह अटल मान सके। यही धर्म है।

नटी

तो धर्म मनुष्यरूपी जानवर के लिए एक लगाम है।

सूत्रधार

लेकिन अक्सर वही जानवर उस लगाम को ही चबा लेता है।

(प्रकाश पीछे टीले पर टिक जाता है जहाँ मंजूषा के आगे उसे ओट किये पर्दे को दोनों ओर से सम्हाले सूत और मागध खडे हैं जसे कथकली के नायक की अवतारणा करनेवाला पर्दा होता है।

क्रमश भोर का सकेत देता हुआ प्रकाश सारे मच पर फल जाता है। और मच की तीन सतहें दीखती हैं। ऊपरवाला स्तर जहाँ सूत और मागध पर्दा पकडे हुए हैं, सबसे छोटा है। उसके नीचे कुछ अधिक विस्तृत क्षेत्र मे दोनों ओर करबद्ध मुनिजन खडे हैं। शुक्राचार्य, गर्ग और अत्रि। नीचे एक तरफ सुनीथा, दासी एव अन्य स्त्रियाँ, दूसरी ओर जनपद के मुखियागण।

पृष्ठभूमि से उसी सगीत का स्वर जो धीरे धीरे शान्त हो जाता है। शुक्राचार्य बोलते हैं।)

शुक्राचार्य ब्रह्मावर्त के त्यागियो हमारी बात सुनें। देवी सुनीथा, आप भी ध्यान दें! वेन के जिस निन्द्य को देवी सुनीथा ने अपने चमत्कारपूर्ण तप से इतने दिन सुरक्षित रखा, और हमने अपनी साधना और तपस्या के बल पर उसका मन्थन किया। पहले हमने वेन की दाहिनी जंघा को मथा।
(पृष्ठभूमि मे तालवाद्यों का मन्द नाद पुन शुरू होता है। पर्दा किंचित हिलता है और धीरे धीरे उसे सूत और मागध नीचा करते हैं। पर्दे के ऊपरी सिरे के पीछे क्रमश एक सिर और मुखौटा दीखते हैं। मुखौटा भयंकर और काला है। डमरुओं की आवाज कुछ ऊँची होती है। मुखौटेवाला पुरुष पर्दे को लाँघकर बाहर आता है। सूत और मागध पुन पर्दा उठा लेते हैं।)

(नीचे जनपद के मुखियागण एक-एक करके और बाद मे एक साथ बोलते हैं।)

पहला मुखिया हम एक भयंकर मुखौटा देख रहे हैं।
दूसरा इसका रंग जले हुए खम्भे के समान है।
तीसरा इसकी आँखें लाल और क्रूर हैं।
सब मिलकर कौन है यह विलक्षण प्राणी?
अत्रि यही वेन का जंघापुत्र है।

(मुखौटेवाले पुरुष की व्यंग्यपूर्ण हँसी)

पहला मुखिया कैसी विचित्र हँसी है वेन के इस जंघापुत्र की?
दूसरा मानो हम सब पर हँसता है?
तीसरा क्या वेन के मन का सारा मैल इस जंघापुत्र म समा गया है?

(आगे बढता हुआ वह पुन हँसता है।)

शुक्राचार्य (फुर्ती से उसका कन्धा पकडकर) बैठो निषाद! तुम घने जंगलो और पहाडियो मे विचरनेवाली जातियो के सरदार बनोगे, वेन के जंघापुत्र! इधर बैठो!

पुरुष (उसके हाथ को बरबस हटाता हुआ) जघापुत्र।
(अट्टहास) हा, हा, हा !
(तेज़ी के साथ प्रस्थान)

गग निषाद ! निषाद !

सुनीथा मुझे यही डर था कि वेन की कालिमा ही प्रकट होगी।

शुक्राचार्य ठहरो देवी सुनीथा ! हमने उसके बाद वेन की दाहिनी भुजा को मथा, और (डमरुओं का निनाद ! पर्दा हिलता है सूत और मागध उसे नीचा करते करते नीचे डालते हैं और यों एक अत्यन्त मनोरम मुखौटा पहने, सिर पर ऊष्णीय और शरीर पर आभूषण धनुष, बाण, कवच, इत्यादि से सुसज्जित एक भव्य पुरुष आगे बढ़ता है। डमरू आदि शान्त होते हैं।)

हला मुखिया यह तेजस्वी आनन।

दूसरा यह गौर शरीर

तीसरा ये वलिष्ठ भुजाएँ

सब मिलकर कौन है यह ? देवराज इन्द्र का स्वरूप ?

शुक्राचाय यही वेन के भुजापुत्र हैं—पृथु !

सुनीथा यही, यही, हाँ यही है। यही वह तपा हुआ सोना ह जिसके लिए मैंने वेन की देह की भट्ठी को प्रज्ज्वलित रखा था।

शुक्राचाय आयुष्मान यह लीजिए।
(पथु को कुशा की रस्सी पकडाता है।)

सुनीथा कुशा ? वही कुशा की रस्सी

शुक्राचाय हा, वही कुशा की रस्सी ! लेकिन, देवी अधीर न हो ! आयुष्मान् आपको इस समाज के समक्ष हमें वचन देने हैं।

पथु मैं तैयार हूँ।

शुक्राचाय और हरेक वचन पर आपको कुशा की इस रस्सी म एक गाठ लगानी है !

पथु पहला वचन ?

शुक्राचाय यह कि आप अपने बाहुबल से ब्रह्मावर्त के आश्रमों और

यज्ञशालाओ की रक्षा करेंगे।

पृथु अवश्य करूँगा। (गाठ बाधता है।)

अत्रि दूसरा वचन—कि प्रिय और अप्रिय का विचार छोडकर सब प्राणियो के प्रति एक सा भाव रखेंगे।

पृथु यथाशक्ति एक सा भाव रखूगा। (गाठ लगाता है।)

गग लोक मे जो कोई धम से विचलित होगा, उसे परास्त कर दण्ड देंगे, लेकिन

पथु दण्ड दूगा, लेकिन

गग लेकिन वेदपाठी ब्राह्मण आपके लिए अदण्डनीय होग।

(पृथु रुक जाता है।)

शुक्राचाय रुकिय नही आयुष्मान्! लगाइये तीसरी गाठ!

(पृथु बिना कुछ बोले गाठ लगा देता है।)

अत्रि चौथा वचन! वेद मे दण्ड दने और व्यवहार का जो नित्य धम दिया गया है उसके अनुसार ही शासन करोग। मन मानी नही करोगे।

पृथु मनमानी नही करूँगा। (गाठ बाधता है।)

शुक्राचाय पाचवा वचन—समाज को वणसकरता से बचायेंगे, आय जाति के रक्त मे मिलावट नही होने देंगे।

(पृथु रुक जाते हैं।)

गग आप फिर रुक गय!

पथु रक्त की मिलावट को रोकना! क्या यह सम्भव है?

अत्रि वीरवर, हिचकिय नही! डाकुओ की चुनौती को याद कीजिय।

पृथु याद है! (गाठ लगाता है और कुशा को आगे बढाता है।) लीजिये।

शुक्राचाय (कुशा की रस्सी को पथु के हाथ से लेकर) आयुष्मान, लाइय अपना हाथ! (कुशा को पृथु की कलाई मे बाधता है।) यह कुशा ही विधान है इसकी गाँठें ही राजधम है, जनपद का लोक प्रजा है और उस प्रजा के अनुरजक

आप हमारे राजा हैं।

मुखिया गण और मुनि } जय हो, हमारे पहले राजा पृथु की जय हो!

(सूत और मागध आगे बढ़ते हैं और करबद्ध होकर स्तुति करते हैं।)

सूत मागध (एक साथ) हे राजन्, हे नरेश्वर, हे भूपति, हम आपकी स्तुति करते हैं।

सूत आप दुष्टों के लिए दण्डपाणि होंगे, आप धर्ममर्यादा के विरोधियों का नाश करेंगे। आप अकेले ही प्रजा का पालन-पोषण और अनुरंजन कर सकेंगे और इसीलिए हे शत्रुनाशक, हे दृढ़प्रतिज्ञ, हे लोकपालक राजन्, हम आपका अभिनन्दन करते हैं।

मागध जिस प्रकार सूर्य देवता, आठ महीने तपते रहकर जल खींचते हैं और वर्षा ऋतु में उसे उँडेल देते हैं उसी प्रकार आप प्रजा से कर के रूप में धन संचय कर उसे प्रजा के हित में ही व्यय करेंगे। इसीलिए हे नीतिपालक राजन्, हम आपको नमस्कार करते हैं!

सूत जिस तरह सवेरे की आहट सुनकर अँधेरे का महासागर सिमटकर लोप हो जाता है ऐसे ही आपकी बुद्धि के स्पर्श से सारे दुख दैन्य, अत्याचार और अनाचार की दुर्दम कालिमा गायब हो जायेगी।

मागध जैसे अन्धकार के कैदी वृक्षों में पक्षियों की जंजीरों पर सूरज की चोट पड़ते ही वे खनखना उठती हैं, वैसे ही मुनियों और ब्राह्मणों के यज्ञों के दबे हुए स्वर आपके सर्वव्यापी आश्रम में आकाश को गुंजायमान कर देंगे।

सूत मागध (एक साथ) हे परमप्रतापी हे परमसमर्थ, हे परमबलशाली राजन, हम बारम्बार आपके प्रकट होनेवाले गुणों और कर्म की वन्दना करते हैं और—

(पृथु जो बढ़ती हुई बेताबी से यह सब सुन रहा था, उन दोनों को रोक देता है।)

पृथु ठहरिए ! यह आप किसकी प्रशंसा कर रहे हैं ?
सूत राजन् !
(अचकचाकर दोनों बोल नहीं पाते)
पृथु आपकी खुशामद के दर्पण में मुझे अपना चेहरा तो नहीं दीखता। (अपना मुखौटा हटाते हुए) क्या आप मेरे मुखौटे की तारीफ कर रहे थे ! अब देखिए !
मागध यह मुखौटा नहीं, आपके भविष्य का दर्पण है राजन !
सूत हम आपके तेजस्वी चेहरे पर आगामी प्रताप और पराक्रम की रेखाएँ देखते हैं।
पृथु बन्द कीजिये यह शब्दाडम्बर अभी तो मैंने राजा होकर रत्ती भर काम नहीं किया। अभी से स्तुति कैसी ? (सब लोगों को सम्बोधित करते हुए) सुनिये मुनिगण, सुनिये माता सुनीथा, सुनिये ब्रह्मावर्त के निवासियो ! आपने मुझे राजा बनाना स्वीकार किया। इसके लिए मुझे स्तुति नहीं, आपका सहयोग चाहिए। वाणी का विलास नहीं, कर्म का उल्लास चाहिए। बिना मेहनत के तारीफ मुझे उतनी ही अशोभनीय लगती है जितनी बिना बुराई के निन्दा !
(सहसा बाहर से निषाद का मुखौटा सामने गिरता है।)
गर्ग निषाद !
सुनीथा जघापुत्र !
(कवष का प्रवेश। गम्भीर और व्यस्त)
कवष हाँ, मैं जघापुत्र ! आप लोगों को सावधान करने लौटा हूँ।
पृथु कवष ! ठीक आये ! तुम्हारी जरूरत है।
कवष पृथु !
अत्रि राजन् कहो, निषाद !
पृथु क्या बात है कवष ?
कवष दस्युओं का जत्था दूसरी ओर चढ़ आया है।
पृथु आश्रम पर ?

कवप	नही, उन्होने कुछ दक्षिण की ओर सरस्वती पार की है और अब वे गाँवो की ओर बढ रहे हैं।

मुखिया 1	गावो की ओर ?

मुखिया 2	डाकू गाँवो की ओर बढ रहे हैं ! भागो !

मुखिया 3	भागो, भागो !

सूत	कही वे इधर आ गये तो ?

मागध	हम किधर भागेंगे ?

मुखिया 1	हमारे कुटुम्ब !

मुखिया 2	हमारे गाय बैल !

अत्रि	सबसे पहले आश्रमो की रक्षा हो !

गर्ग	अगर हमारा रास्ता ही बन्द हो गया ?

शुक्राचार्य	राजन् कोई उपाय सोचिये।

(कोलाहल)

पृथु	शान्त ! शान्त ! आपने मुझे राजा बनाया है तो मेरा आदेश भी सुनिये ! सूत और मागध, आप कोई गुप्त रास्ता जानते हैं ?

सूत	हा !

पृथु	इन मुखिया लोगो को उधर से ही ले जाइये !

मागध	कहा ले जायें ?

पृथु	पूरबी सीमा पर अनूप प्रदेश मे। आप दोनो को वहा का अधिपति नियुक्त करता हूँ।

सूत मागध	जय हो !

मुखिया	हमारे खेत और खलिहान।

पृथु	मैं उनकी रक्षा करूँगा। हर गाव के दस-दस नौजवान मेरे साथ रहेगे। आप लोग अनूप प्रदेश को गढ बनाइये ! जाइये और वहा अपनी भुजाओ के प्राचीर बनाइये।

सूत	भुजाओ के प्राचीर !

मागध	भुजाओ के प्राचीर !

(सूत मागध और मुखिया लोगों का प्रस्थान)

पृथु और क्या क्या मालूम है उर्वी को ?

कवप बुलाऊँ उसे ? मिलेंगे ?

पथु ठहरो ! उर्वी ने तुम्हे सावधान किया ? (सोचता सा) कहीं कहीं उर्वी दस्युकन्या तो नहीं है ? यही तो उसका रहस्य नहीं है जिसे हम इतने बरसों से समझ नहीं पाते थे ? यही तो कारण नहीं है कि हम लोग उसका भेद जान न सके ? आर्यों के वैरी डाकुओं की कन्या ?

कवप यह क्या पथु ! तुम भी आर्य नाम की दुहाई देने लगे ? गुरुजी का आदेश क्या हुआ ? छि ! उर्वी आर्य विरोधी दस्यु और मैं आर्यों का दास निषाद !

पथु मुझे उत्तेजित न करो। कवप, मैं इन डाकुओं का विनाश करने के लिए वचनबद्ध हूं !

कवप लेकिन उर्वी कहती है वे लोग डाकू नहीं हैं। लूटपाट उनका पेशा नहीं है।

पथु तब आश्रमों पर उनके हमले ?

कवप एक जमाने में ब्रह्मावर्त के आर्यों और इन्द्र ने इनके नगरों को नष्ट किया सिंधु इरावती और सरस्वती के तट पर के जगमगाते नगर वीरान हो गये। उन्हें डर है कि अब ब्रह्मावर्त के मुनि अपने यज्ञों के नाम पर जंगलों को काट रहे हैं। मिट्टी बहकर सरस्वती की धारा को बन्द कर रही है। इस तरह उनकी बची खुची खेती ही मटियामेट हो जायेगी।

पथु देखता हूँ इतनी थोडी भी देर में तुम्हे उर्वी ने खूब पढाया है।

कवप चलो पथु, मैं तुम और उर्वी सरस्वती की धारा को फिर से बहाने की तदबीरें खोजें और यों इस झगडे की जड ही दूर कर दें !

पथु झगडा ! इसे तुम झगडा कहते हो ? इतनी देर में यह भी भूल गये कि हमारे घोडों की टापों से उडी धूल के पीछे भी इन डाकुओं के क्रूर और हिंसक चेहरे आश्रम में अग्नि

बरसा रहे थे ? भूल गये कि तुमने और मैंने उनकी बेरहमी के जाल में तड़पती मछलियों की भांति आश्रमवासियों को बचाया ! हम लोग तड़ित की भांति उन काले बादलों को चीरकर टूट पड़े। देखते ही-देखते बीसियों को तुमने धराशायी किया। कवष धनुष की यह प्रत्यंचा मचल रही है, और तूणीर में से बाण निकलने को आकुल हैं ! मैं युद्ध करूँगा !

कवष युद्ध मैं भी करूंगा।

पृथु तो यह लो आजगव !

कवष नहीं ! यह धनुष मेरे लिए नहीं है। मैं जघापुत्र हूँ। मानसपुत्र राजन, तुम्हारे साथ कन्धा भिड़ाकर मैं युद्ध नहीं कर सकता।

पृथु बुरा मान गये मित्र ? जानते हो, राजा बनने की मेरी एक शर्त यह थी कि तुम मेरे साथ रहोगे ?

कवष उस शर्त में उर्वी... उर्वी से सम्बन्ध भी शामिल है क्या ?

पृथु सम्बन्ध ? कवष, तुम्हारे स्वर में शंका की यह कैसी आहट ?

कवष सीधा जवाब दो पृथु !

पृथु मैंने वचन दिया है कि रक्त की मिलावट नहीं होने दूंगा। उर्वी दस्युकन्या है, है न ?

कवष बात साफ हो गयी। राजन, मैं चलता हूँ।

पृथु राजन ? कवष ! कहाँ जा रहे हो ?

कवष यकीन मानो, आश्रम का बाल भी बाँका न होने पायगा ! हम लोग उसके इर्द गिर्द ही होंगे।

पृथु लेकिन युद्ध तो यहाँ होगा !

कवष हमें एक और युद्ध भी लड़ना है ! सरस्वती की धारा को मरनेवाले रेगिस्तान के विरुद्ध !

पृथु और इधर डाकू लोग सारे ब्रह्मावर्त को तहस-नहस कर डालें ? नादान... तुम दस्युकन्या के फेर में पड़े हो !

कवष (हँसता है) खूब। जैसे तुम्हे उर्वी से भी कोई लगाव नहीं रहा।

पृथु (पीठ फेरकर थोडा दूर हटता हुआ) यह मैं कब कहता हूँ कि उर्वी यहा से चली जाय? मुझे अपने नये उत्तर दायित्व मे उसकी भी जरूरत है।

कवष (कटु स्वर) तुम्हारा मतलब है अनुगामिनी लेकिन सहधर्मिणी नही? यही तुम्हारी चाल है, राजा पृथु!

(प्रस्थान)

पृथु (हठात् उत्तेजित) और तुम जघापुत्र? (कवष की ओर मुडकर) तुम? कवष! कवष!! (उच्च स्वर मे) मैं समझ रहा हू तुम लोगो की चाल! (जोर से) जाओ जाओ लेकिन सावधान! मेरे पौरुष का जगल सुलग चुका है और इसकी धधकती हुई आग तुम्हे भी ग्रस लेगी! ठीक ही हुआ! सारे सशय भस्म हो रहे है सारी दुविधाएँ और मेरा रास्ता साफ है (धनुष का सधान करते हुए) अकेला हूँ तो क्या—मेरे हाथ सधे हुए है। अकेला! (धनुष की टकार! तुरन्त बाद पायल की झकार! अचना का प्रवेश।)—अकेला!

अचना आप अकेले नही है राजन!

पृथु तुम कौन?

अचना गगपुत्री अचना! पितामी ने कहा था कि आप अकेले नही रहेगे?

पृथु अचना! (दृष्टि अचना पर अटक जाती है। तरल स्वर।) कौन से मादक फूल मुस्करा उठे?

अचना आपके चरणो मे! और (बराबर जाकर हाथ पकडते हुए) आपके बराबर मे मैं भी! मैं आपकी रानी जा हू न?

पृथु (ठगा सा विमोहित) रानी!

अचना मुनियो ने मथन करके अमृत निकाला तो उसके लिए पात्र की भी तो कल्पना की! मैं ही आपके अमृत की कुम्भ

हूँ। (अपने दोनो हाथ पृथु के गले मे डालती है। आखो मे आखें!)

पृथु अमृत और कुम्भ! (मन्द आविष्ट स्वर) यह कैसा जादू है कि भुजाएँ फडकती है शत्रु के सहार के लिए भी और कुसुमा की इस वल्लरी को कसकर बाधने को भी! चट्टान मे कौन सी दरार तुम्हे मिल गयी हठीली कली?

अर्चना (स्वप्नवत) वह छुवन जो पल म गगरी को छलका दे! कब से बैठी हूँ सँजोये सोने की थाली

पृथु नही, कोई दरार नही! थिरको मेरी चट्टान पर सहार के सूर्य और तुम भी चपल चादनी! मैं ही डमरू हूँ और मैं ही बसी!

अर्चना सोने की थाली और ये दमकती कटोरिया। भरा है जिनम लबालब रस का सागर पर कोई आता नही, आता नही!

पृथु आओ, हिल्लोर उठ रही है! एक ही उठान मे तुम्हारी धरती का आलिगन और गगन की हलचल! एक ही उन्माद मे धनुष की टकार और प्यार का राग! कोई उलझन नही, कोई दुविधा नहीं! आओ!

(दोनो आलिगनबद्ध। नेपथ्य मे नगाडे और डमरू की ध्वनि जिनके बीच वशी का अनुराग भरा स्वर। अँधेरा)

अक दो

(प्रकाश नटी और सूत्रधार पर पडता है। वे कोने मे खडे हैं।)

सूत्रधार

नटी, देखती हो एक विशाल वृक्ष जिसकी डालें और शाखाएँ फली हैं इतनी दूर तक कि आखो की मुट्ठी मे समा नही पाती।

नटी

जिसकी जडो का जाल गुम्बद की गूजो की तरह अनजानी गहराइयो की टोह लेता ही रहता है। रुकने का नाम नही।

सूत्रधार

और उस वृक्ष की ऊँची डालो पर झूम रहे हैं रग बिरगे फल! फूल जो न झरते हैं और न फल बनते हैं, न सूखते हैं न बीज ही देते हैं।

नटी

सूत्रधार कौन हैं ये गधहीन, स्वादहीन निर्जीव, पर

मनोरम प्रवचनाएँ जिन्हें न हम छू सकते हैं, न खा सकते हैं, न धरती पर बो सकते हैं ?

सूत्रधार

देवता ही वे फूल हैं, नटी !

नटी
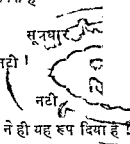
देवता जिन्हें आदमी ने ही यह रूप दिया है ?

सूत्रधार

ओ मानव समाज के विराट् वक्ष ! तुम्हारी अनगिनती आस्थाओं की डालों पर झूमनेवाले इन फूलों की हम स्तुति करते हैं पूजन करते हैं, वन्दना करते हैं।

नटी

क्या देवता आदमी की मदद नहीं करते ?

सूत्रधार

यही तो तमाशा है। फूल ऊपर लटके हैं, पर बीज वहाँ नहीं हैं।

नटी

कहाँ हैं वे बीज ? क्या आदिराज पृथु जानता है ?

सूत्रधार

क्या कस्तूरी मृग जानता है कि उसकी नाभि में क्या है ? वह देखो !

(मंच पर प्रकाश फैल जाता है। पृथु पीठ किये खड़ा है। सूत और मागध उसे सम्बोधित करते हैं।)

सूत राजन, अब तो हम आपके पराक्रम की गाथा गा सकते हैं ?

मागध आपने ब्रह्मावर्त की धरती को डाकुओं से मुक्त कर दिया ! वे दुष्ट कंट मरकर नष्ट हो गये, या भाग गये ।

सूत आश्रमों में शान्ति है । एक बरस से यज्ञ और अग्निहोत्र बराबर चल रहे हैं । ऋषि मुनि धर्म-कर्म में लगे हैं । वर्ण व्यवस्था स्थित है ।

मागध अद्भुत कौशल से आपने युद्ध किया । इन्द्र ने जैसे वृत्रासुर का वध किया था वैसे आपने असुरों की सन्तानों को मार भगाया ! आपके धनुष की टंकार सरस्वती पार के खँडहरों की ललकार है, पर अब कोई उस ललकार का जवाब देने का साहस नहीं करता ।

सूत हम आपकी यशोगाथा का भूमण्डल पर प्रचार करेंगे ।

मागध हमें अनुमति दें, राजन् !

पृथु (घूमकर उनकी ओर देखता है) सूतमागध ! यशोगाथा की औषधि हर रोगी पर काम नहीं करती ।

सूत रोगी ?

मागध राजन, आपके प्रताप से ब्रह्मावर्त की जनता के सब रोग-शोक समाप्त हो गये ।

पृथु और अगर मैं कहूँ कि रोगी मैं हूँ ?

मागध आप ?

सूत परिहास कर रहे हैं राजन् !

पृथु सुनिए आप स्तुति कीजिए, लेकिन मेरी नहीं, देवताओं की !

मागध अश्विनीकुमारों की स्तुति हमने की जब ज्वर और पीड़ा ने हमारे कुटुम्बों को सताया ।

सूत वरुण, अग्नि और सबसे ऊपर इन्द्र—इन सभी देवताओं की स्तुति हमने की जब राजन, आप शत्रुओं के दलों से घिरे हुए उनके प्रचण्ड आघातों का सामना कर रहे थे ।

पृथु पुकारिए इन्द्र को, फिर पुकारिए ! इन्द्र को वरुण को,

अग्नि को, अश्विनीकुमारो को। पुकारिए और पूछिये कि क्या उनके पास चुनौतियों की वह प्राणवायु है जो मेरी वशी के स्वरो को फिर से जगा सके ?

(अचना का प्रवेश)

अचना — यह मैं क्या सुन रही हूँ देव! यह कैसा गगनभेदी उच्छ्वास!

सूत — महारानी, हमारा प्रणाम स्वीकार हो।

पृथु — देवी! अचना! यह प्रलाप तुम्हारे कानो के लिए नही था।

अचना — असम्भव! मैं आपकी अर्धांगिनी हूँ। जो बयार आपको छुएगी क्या वह मुझे नही झकझोरेगी ?

मागध — देवी, हम लोग महाराज की कीर्ति की ध्वजा को अपनी वाणी के स्तम्भ पर फहराना चाहते हैं।

सूत — क्या हमे अनुमति मिलेगी ?

अचना — अवश्य! आप दोनो जायें और आदिराज के पराक्रम की कथा को कोने-कोने मे प्रसारित कर दें।

सूत मागध — जय हो, महारानी!

(प्रस्थान)

पृथु — (कुछ मौन के बाद) अचना, यह सब व्यथ है।

अचना — कीर्तिगान आपके शौय के गम्भीर निनाद की ही तो प्रतिध्वनि है।

पृथु — शौय!

अचना — वह पराक्रम जिसने एक झटके म ब्रह्मावत को उबार लिया!

पृथु — किसी ऊची चट्टान की कडी चढाई तय कर लेने के बाद देखता हूँ पठार, समतल भूमि! इसका क्या करूँ अचना? मैं तो चढाई का आदि हूँ। यह अतहीन ऊब जिसने मुझे आ घेरा है। ऊब! आते जाते श्वासो की मरुभूमि! कण कण म व्याप्त, जमी हुई ठिरन क्योकि हवा ठहर गयी है और हड्डियो को भेदनेवाले

सद झकोरे आते ही नही।

अचना सद भकारे ही रक्त म तेजी लाने के लिए काफी नहा हैं।
(निकट जाकर स्पश करती है।)

पृथु प्यार की गुफाआ म भुलाना चाहती हो, अचि ?

अचना क्यो नही ? क्या घमासान युद्धा के कोलाहल के बीच भी उन कुजा म हमने विहार नही किया है ?

पृथु (मादक सम्मोहन) तुम्हारा यह राशि-राशि वभव, अचि ! एक ही स्पश म युगो का आमन्त्रण ! ओह यह स्पश ! यह तुम्हारी देह का सागर और मैं हूँ कि गहराइया मे खो जाता हूँ और सागर की तलहटी मिलती ही नही मिलती ही नही। ओह, तुम्हारी देह का सागर अचि !

अचना (विभोर) प्रियतम !

पृथु (एक झटका सा) नही ! नही अचना ! यह पलायन है !

अचना पलायन ! आयपुत्र किससे बचकर भागना चाहते हैं ?

पृथु (किंचित उपेक्षा) तुम समझ नही रही हा !

अचना (जिद करती हुई) किसकी याद बिजली की तरह कौंध कर आपको मुझसे दूर भटकाती है ?

पृथु (कुछ समझता सा) शक करती हो ? नादान !

अचना नादान ! यही तो उसने मुझे कहा था !

पृथु किसने ?

अचना उसने जो सखी न हो पायी। उर्वी !

पृथु साल भर पुरानी बात !

अचना आपकी ऊब मन का यह उचाट ! अब समझी प्रेयसी के पाश से आगे गहिणी का व घन बासी लगता है न !

पृथु अचि ! (पुन स्पश, पुन स्निग्ध स्वर) पुरूरवा और उवशी के प्रणय की कथा कहनेवाले क्या जानें कि वसिष्ठ और अरुन्धती के घर के आँगन के कूप का जल कितना

मधुर, कितना मादक था ! काश, कोई कवि, कोई गायक उस रागिनी की धड़कन को पकड़ पाता जिसमें हम दोनों लय-ताल की तरह बह चुके हैं।

अर्चना आप राजा हैं ! दाम्पत्य की सेज की पाटियाँ राजा के लिए वैसे ही नाकाफी हैं जैसे उसके राज्य की सीमाएँ ! मुझे खुद ही सोचना चाहिए था। उर्वी को आपके मन-बहलाव के लिए

पृथु (सरोष और सावेश) उर्वी ! उर्वी ! उर्वी ! बन्द करो यह रटन। उस दस्युकन्या की याद के कोयले भी ठण्डे हो चुके हैं। (कुछ सम्हलकर अर्चना के निकट जाकर) अर्चि, सुनो ! एक तराजू है मेरा यह तन मन ! एक पलड़े पर तुम्हारे आलिंगन का सोना और दूसरे पर चुनौतियों का भार ! अगर केवल केवल प्यार के सम्मोहन में खो जाऊँ तो तो तराजू के पलड़े चचल हो जाते हैं ! अर्चि !

अर्चना आर्यपुत्र, राजधर्म का भार काफी नहीं है क्या ?

पृथु राजधर्म ! मन्त्रिमण्डल की चखचख शिकायतों के अम्बार, व्यवस्था की चिन्ताएँ ! इनमें कौन सी चुनौती है ? जैसे जमीन पर लेटा हुआ व्यक्ति चींटियों के टीलों को देखे और समझे कि वे पहाड़ हैं। ना, ना, अर्चि ! मैं तो सीधे खड़े होकर गगनस्पर्शी हिमाच्छादित शिखरों के आह्वान को मानूँगा

अर्चना तो फिर पिताजी की बात ठीक है ! आपका क्षात्रधर्म चक्रवर्ती बनने में है !

पृथु चक्रवर्ती के युद्ध ? मैंने किसलिए इतने युद्ध किये, हजारों शत्रुओं को मौत के घाट उतारा ? मुनियों के आश्रमों और ब्रह्मावर्त की रक्षा के लिए। लेकिन चक्रवर्ती की आकांक्षा के युद्ध तो कोरी नर हत्याएँ होंगी ! अर्चि, कोई एड़ नहीं जो मेरी आकांक्षा के घोड़ों को गतिशील कर

दे ! (फिर वही स्निग्धता) इसलिए पलायन ही सही। तुम्हारी मनभावन, चिरनवीन फुलवारी म पलायन। तुम्हारे जादू भरे अँधेरे मे पलायन ! जानता हूँ मैं अपने से बचकर भाग रहा हूँ पर पर

(आलिंगन और अन्धकार। प्रकाश नटी और सूत्रधार पर टिक जाता है।)

नटी

सूत्रधार, क्या हमे इतनी छूट है कि चीटी के टीलो को छोड दें और पहाडो की चोटियो की ओर ही दौडें ?

सूत्रधार

हम लाग एक दावत मे मेहमान हैं। सकडो व्यजन हैं— खटटे, मीठे, नमकीन, पर स्वाद इन व्यजनो मे नही है। स्वाद है हमारी अपनी जीभ म !

नटी

क्या पृथु म इतनी समझ नही कि अपनी जीभ के स्वाद को पहचान सके ?

सूत्रधार

समझ ? नटी, समझदारी की कुजी आदमी के हाथ तब लगती है जब ताले आप ही टूट चुके होते है।

नटी

तो फिर, वही ऊब, वही उदासी, वही बेमाना, बधरबार भटकना !

सूत्रधार

हलचल और चीत्कार की आँधी कभी कभी आती है और अपने आचल म ऊब और उखडे मन को सिमेट लेती है।

नटी

पर वह भी तो एक पलायन है।

(प्रकाश बायें प्रवेश पर। दासी आती है—वही जो सुनीथा की दासी थी।)

दासी (खँखारती है। झिझकते हुए) महाराज!

(पृथु और अचना छिटककर एक दूसरे से अलग हो जाते हैं।)

अचना क्या है दासी?

दासी क्षमा कर देवी! सूत और मागध बुरी तरह घिर गये हैं और उनकी जान पर खतरा है।

पृथु क्या? असम्भव। मैंने डाकुओ के सभी दलो को नष्ट कर दिया! अव किसकी हिम्मत कि मेरे अनुचरा का बाल भी वाका कर?

दासी डाकू नही, देव! दूर दूर गावो से आयी जनता! सूत और मागध आपकी कीर्तिगाथा गा रहे थे कि कि

अचना साफ कहो, दासी!

दासी क्षमा करें महारानी! जनता ने सूत मागध को गीत गाने से रोक दिया। वे महाराज के यश के गीत, उनके पराक्रम-गान नही सुनना चाहते। वे बहुत बेचन हैं, तरह तरह के नारे लगा रहे हैं, उपद्रव करने पर तुले हैं।

पृथु मैं स्वय जाकर देखूगा। मैं अपनी प्रजा को जानता हूँ।

(तेजी से प्रस्थान)

अचना आखिर बात क्या है?

दासी अकाल, महारानी! अकाल और भूख!

अचना किस दिशा मे अकाल का प्रकोप है ?
दासी सभी दिशाओं से दूर दूर के गाँवा से लोग आये हैं।
अचना आसपास तो ऐस आसार नही दीख पडते थे।
दासी आसार ! व कहते हैं कि पेड के कोटर के भीतर सुलगती आग जसे बाहर फौरन जाहिर नही होती, वसी हमारी भूख की ज्वाला है। पर उनके नारे, उनकी आँखों का रोष, उस भीतरी ज्वाला का धुआँ है !
अचना पर एक और भी तो धुआँ है। मुनिया के यज्ञ का धुआँ ! वह इस क्षणिक आवेग की गन्दगी को दूर कर देगा।
दासी देवी, उनकी यही तो शिकायत है कि महाराज पृथु ने जो कुछ किया है मुनिया के आश्रमो और उनके यज्ञा के लिए।
अचना य आश्रम और यज्ञ ही तो जनता और उनकी खेती का कल्याण करत हैं।
दासी देवी, मुनि लोग आहुतिया द रहे हैं, मुनि लोग मन्त्रोच्चारण कर रहे हैं। लेकिन घडा रीता होता जा रहा है और उस छेद का पता ही नही जिसम होकर बूद बूद जल रिसता रहा है।
अचना देवता उस घडे को रीता नही होने देंगे।
दासी देवता मुनियो के आह्वान को अनसुना कर रहे हैं। मुनियो के मन्त्र

(गर्ग और अत्रि का प्रवेश)

गर्ग मुनिया के खिलाफ यहा भी नारे लग रहे हैं क्या ?
अचना पिताजी !
गर्ग देखता हूँ राजमाता सुनीथा तो परलोक चली गयी, लेकिन मुनिया के विरुद्ध षडयन्त्रा के बीज बोने के लिए अपनी दासी को छोड गयी है।
दासी क्षमा करें मुनिवर ! मैं तो
गर्ग एक दिन अभिशप्त कुशा को धरती म तुम्ही रोप रही थी। *क्या सच ही धुनाचार्य तुम्हे रोकना चाहते थे ?*

अचना यह कसे वचन पिताजी ?

गग अग्नि मुनि से पूछो।

अचना दासी, तुम जाओ।

(दासी का प्रस्थान)

आपका मतलब है कि शुक्राचाय का हाथ है इस कोलाहल और उत्तेजना के पीछे ?

अत्रि नही। लेकिन अगर शुक्रनीति कामयाव नही हो रही तो दोष किसका ?

अचना पर मन्त्रिमण्डल के परामश तो आप लोग सब मिलकर ही देते है।

अत्रि शुक्राचाय भृगुवशी हैं। और भृगुवशियो की एक आदत आप नही जानती। मौका पडते ही ये सारे अधिकार हथिया लेते है। शुक्राचाय पुरोहित मन्त्री ही नही प्रधानमन्त्री बन बैठे हैं। अब भुगतें।

(शुक्राचाय का प्रवेश)

शुक्राचाय देखता हूँ म त्रीगण अपनी सलाह अब मन्त्रिमण्डल मे न देकर यहा महारानी के कक्ष मे देत हैं।

अत्रि मन्त्रिमण्डल अब कहा है शुक्राचाय। (व्यग्य) जहा आप हैं वही मन्त्रिमण्डल है !

शुक्राचाय अपनी जिम्मेदारी से बचने के लिए क्या वहाने की जरूरत है अत्रिमुनि ?

अत्रि बहाने तो आपको सोचन है, भगुपुत्र अपने बनाये विधान की दरारो पर पदा डालने के लिए।

शुक्राचाय पर्दा ! भगुवश पर्दा डालता नही पर्दाफाश करता है।

अत्रि आत्रेय वश को छिपाना ही क्या है जो पर्दाफाश का डर हो ?

शुक्राचाय क्यो मेरा मुह खलवात हैं अत्रि ?

(दासी का तेजी से प्रवेश)

दासी गजब हो गया।

अचना	क्या हुआ ?
दासी	देवी, राजा घिर गये हैं।
अचना	घिर गये ह ?
दासी	उ होने *आजगव धनुष अलग उठाकर रख दिया।* खड्ग को छुआ तक नही ! निहत्थे भीड मे घुस गये और उस तरफ बढने लगे जहाँ सूत और मागध पर भीड बेतहाशा प्रहार कर रही थी।
अचना	(उद्वेग से) प्रहार ? मैं जा रही हूँ।
गग	अचना। तनिक ठहरो !
अचना	नही पिताजी ! आर्यपुत्र के प्राणो पर खतरा है। (जाते हुए) मुझे जाना है।
	(प्रस्थान। पीछे पीछे दासी।)
गग	अचना ? (शुक्राचाय को लक्ष्य कर) निहत्था राजा! शुक्राचाय, आप क्या सोच रहे है ?
शुक्राचाय	निहत्था और निडर !
गग	हाँ, निडर। और जब वह निडर होता है तो उसके चेहरे पर दीख पडती है झुमलाहट भी और और प्यार भी। मानो मानो
शुक्राचाय	*मानो उस विशाल जनसमूह के स्पश से उसे उल्लास मिल* रहा हो।
गग	ऐसा ही ! आपको क्याकर भान हुआ ?
अत्रि	शुक्राचाय शायद समझ रहे है कि कुशा की रस्सी का जो कवच हमने पृथु राजा को दिया उसका ही जादू काम कर रहा है। कि तु
शुक्राचाय	क्या यह भी याद दिलाने की जरूरत है कि वह कवच नहा था ? वह था हम लोगो और पृथु के बीच अनुबन्ध। मुझे डर है
गग	डर है कि कही राजा को कुछ हो गया तो
शुक्राचाय	नही गग ! नही ! राजा की हत्या की मुझे इतनी चिन्ता

नही जितनी उसके बच जाने की।

गग — ऐं ?

अत्रि — चतुराई की बात और समझदारी की बात म अन्तर है, शुक्राचाय।

शुक्राचाय — अत्रि, उतना नही जितना आपने भगुवश और अत्रिवश के बीच कर रखा है।

अत्रि — मैंने या आपने ?

शुक्राचाय — मुझे डर है कि भृगुवश और अत्रिवश ही नही, सभी मुनियो का स्वाथ खतरे मे पडनेवाला है।

अत्रि — कैसे ?

शुक्राचाय — पृथु की शक्ति वेन से बढकर हो जायेगी।

गग — नही, नही। आप वेन की भाति पृथु की हत्या नही कर सकते।

शुक्राचाय — यह कौन कह रहा है गग ? सुनिए। आपने और हमने जनता को उभारा, उसके गुस्से और आक्रोश को। लेकिन पृथु उसी जनता की कृतज्ञता और उल्लास को पा रहा है इसलिए कि

अत्रि — इसलिए कि वह निडर है ? हरेक पराक्रमी योद्धा को निडर होना पडता है।

शुक्राचाय — लेकिन यदि एक निहत्था व्यक्ति निडर होता है तो उसकी शक्ति का कोई ठिकाना नही रहता।

गग — आपका मतलब क्या है शुक्राचाय ?

शुक्राचाय — यकीन कीजिए मैं आपकी दत्तक कन्या के पति को वेन की राह पर नही भेजना चाहता।

अत्रि — आप चाहते है कि पथु फिर से हथियारो से लैस होकर अपने पराक्रम की ध्वजा फहराये ? तो इसका एक ही उपाय है। पथु आकाक्षा और समाथ्य के जिस तुरग पर इस समय सवार है उस चक्रवर्ती के पथ पर मोड दीजिए।

शुक्राचाय — लेकिन ब्रह्मावत मे अकाल ? जनता की भूख ?

अत्रि भूख की आग का इलाज है वैश्वानर आग हमारे यज्ञ की अग्नि। ब्रह्मावत की भूमि बजर हो रही है। लेकिन गगा के उस पार पूरब दिशा मे जगल भरे पडे हैं।

गग ठीक। हम लोग राजा स कह कि वे वैश्वानर अग्नि को गगा के पूरब की ओर ले चलें। जगल जलेंगे और खेती क लिए नयी धरती मिलेगी।

अत्रि यही नही। सरस्वती पार के अपने नगरा को छोडकर जो दस्यु गगा के पूरब भाग गय हैं, उ ह भी राजा का पराक्रम और वैश्वानर अग्नि का तेज समाप्त कर देगा।

शुक्राचाय सुनिये। वश्वानर की अग्नि म अधिक प्रचण्ड विभीषिका उ ही नगरा के खँडहरो म प्रज्वलित हो रही है।

अत्रि (चौंककर) क्या?

शुक्राचाय (अपने अगवस्त्र की झोली से मिट्टी की मुद्रा निकालकर दिखाता है) यह देखिए।

गग भूचण्डिका। दस्युओ की देवी।

अत्रि जिस पिशाची का पूजन हमारे हवन, हमारी ऋचाओ को बेकार कर देता है!

शुक्राचाय हा यही पिशाची फिर से चढ रही है अत्रि मुनि! और ज्यो ज्यो उसका उ माद बढता है, त्यो त्यो हमारे ब्रह्मावत मे अकाल भी।

अत्रि उस विकराल उ माद को नष्ट करना होगा।

(पृथु का प्रवेश)

(अत्रि के अ तिम शब्दो को सुन लेते हैं।)

पृथु उ माद नष्ट नहीं किया मैंने अत्रि मुनि! मैंने उसका आलिगन किया। जनता मे उ माद की तरगें अब शा त हैं।

अत्रि आप आ गये राजन्!

शुक्राचाय आप कुशल स है?

गग कोई कोई आघात तो नही हुआ आपके ऊपर?

पृथु तूफान के आग डैने फैलाकर उडान लेते समय चील को

जैसा लगता है वैसा ही तो मुझे लगा। मेरे अग-अग मे स्फूर्ति है। सारी उदासी गायब हो चुकी है। आपको आश्चय होगा अत्रि मुनि, मुझे मुझे एक अदभुत आह्लाद का अनुभव हो रहा है।

अत्रि आह्लाद !

पथु हा, आह्लाद। और (स्वर बदलते हुए) क्रोध भी। जनता की जिस भीड को मैं शान्त करके आ रहा हूँ, उसके दुःख दैन्य की कथाएँ सुनकर मुझे करुणा नही आयी, गुस्सा आया। मैं पूछता हूँ आप लोगो से, क्या मैंने आप लोगो को जो वचन दिये थे कुशा की इस रस्सी की गाठें बाधकर वे पूरे किये या नही ?

गग आपने सब वचन पूरे किये।

पथु तो फिर मेरे राज्य म अकाल क्यो है ? क्या आपके यज्ञो की अग्नि को बुझानेवाले दस्युओ को मैंने नहीं मार भगाया ?

गग हमारे हवनकुण्डो से उठनेवाले धुएँ की लपटें आसमान मे बादलो से उलझती रही हैं।

पथु क्या वे बादल बरसते नही ?

अत्रि बरसते हैं। हमारे यज्ञ मन्त्रो को सुनकर ही तो इन्द्र आदेश देते हैं और वरुण, सूय और मरुतगण जल की बौछारें भेजते हैं।

पथु तो फिर पैदावार क्यो नहीं होती ? वह सारा जल कहाँ चला जा रहा है ? आपके यज्ञो से उत्पन्न अग्नि जिन जगलो मे जल रही है वहा की धरती बाद म धान देती क्यो नही ? मेरे कानो म उन लोगो का चीत्कार गूज रहा है। (आवाज बदलकर)—मिट्टी है उसम, रस नही। पानी है उसमें नमी नही। एक ही सत्य है एक ही पुकार—भूख ! भूख !

शुक्राचाय उसका कारण भी एक ही है।

पृथु आप इतनी देर से चुप क्यों थे शुक्राचार्य ?

शुक्राचार्य इसलिए कि मैं चाहता हूँ कि आपका क्रोध और प्रचण्ड हो। क्रोध ही राजा का तप है।

पृथु यह मेरा तप नहीं आचार्य, उस जनता का है जिसे मैं शान्त करने आया हूँ और जिसकी पीड़ा ही मेरा क्रोध बन गयी है।

शुक्राचार्य प्रजा की पीड़ा, हमारी चिन्ता, आपका क्रोध, तीनों का एक ही लक्ष्य है राजन्, एक ही कारण—भूचण्डिका! धरती की दानवी!

पृथु कौन है यह भूचण्डिका जो मेरे बाणों का शिकार होना चाहती है ?

शुक्राचार्य राजन्! सरस्वती-पार के व डाकू जिन्हें आपने अपने पराक्रम से मार भगाया था, इस वीभत्स चण्डिका की उपासना करते थे। (मुद्रा दिखाता है)

पृथु (मुद्रा को हाथ में लेकर देखता हुआ) नंगी नारी मूर्ति! जिसकी कुक्षि में से एक वृक्ष निकल रहा है। छि!

शुक्राचार्य सरस्वती पार किसी खंडहर में छिप छिपे कोई इस चण्डिका का आह्वान कर रहा है। हमारे ब्रह्मावर्त की धरती पर यही पिशाची चढ़ बैठी है। धरती उन्मत्त हो गयी है और उसने अपना सारा रस अन्दर खींच लिया है। तभी तो अकाल है राजन्! अकाल, सूखा और भुखमरी।

पृथु लेकिन उनके नगर और गाँव तो खँडहर बन गये है।

गर्ग हमारे यज्ञ और अग्निहोत्र बेकार हो रहे हैं।

अत्रि धरती हमारे मन्त्रों को अनसुना कर रही है।

पृथु धरती को मेरे धनुष की टंकार सुननी होगी। मैं उसके उन्माद को चूर चूर कर दूंगा।

शुक्राचार्य धरती के उन्माद को चूर करने का एक ही तरीका है राजन्! दस्युओं के खँडहरों में होनेवाले उस भयंकर पूजन को नष्ट कीजिए। कर सकेंगे ?

पृथु — सैंकड़ों की भूख और उन्माद मेरे हाथों में शक्ति बनकर बस गया है, आचार्य !

शुक्राचार्य — हमें आपके हाथों की शक्ति में रत्ती भर भी सन्देह नहीं है। सन्देह है तो आपके मन की दुविधा से।

पृथु — देखता हूँ मेरा मन्त्रिमण्डल मेरे मन का प्रहरी भी बनना चाहता है।

शुक्राचार्य — इसलिए कि आपके मन का मीत उस अनुष्ठान का प्रहरी है जिसे आप नष्ट करने जा रहे हैं।

पृथु — कौन ?

शुक्राचार्य — निषाद !

पृथु — निषाद ? कवष ?

अत्रि — शुक्राचार्य, यह आप क्या कह रहे हैं ?

शुक्राचार्य — ठीक कह रहा हूँ अत्रि ! वही कवष जिसे हम लोगों ने अपने आश्रम से निकाल दिया।

पृथु — कवष आपके आश्रम में था और आपने उसे निकाल भी दिया, ये दोनों मेरे लिए नये समाचार हैं।

शुक्राचार्य — हम लोग आपको छोटी छोटी बातों में उलझाना नहीं चाहते थे।

पृथु — (कुछ सोचता-सा) छोटी-छोटी बातें !

अत्रि — निषाद को आश्रम से निर्वासित करना आवश्यक था। राजन !

गर्ग — उसने सरस्वती के जल को अपावन करना चाहा। निषाद हमारे साथ बैठकर यज्ञ करना चाहता था।

अत्रि — अन्तःसलिला धारा का आचमन करके वह मुनिपद को प्राप्त करना चाहता था।

गर्ग — और इसके लिए उसने सरस्वती की तलहटी को खोदकर बालू के नीचे से पानी निकालना चाहा।

अत्रि — आर्यकुल की प्रतिष्ठा को लेकर निषाद को आश्रम से निकालना ही था राजन् !

गग जाते समय उसने घोषणा की कि वह आश्रम लौटेगा मुनि के रूप म।

शुक्राचाय मैंने उसकी आखो म विकट प्रतिहिंसा की रखा देखी। और अब मुझे सूचना मिली है कि अनाय दस्युओ के किसी खंडहर में भूचण्डी के भीषण अनुष्ठान का रक्षक हैं निषाद।

पृथु कवष इस नगी नारी मूर्ति के पूजन की रक्षा करेगा?

गग कवष आपके साथ विश्वासघात कर रहा है!

पृथु मुझे अपने साथ विश्वासघात की चिन्ता नही है आचाय! लेकिन कवष उस दुराचारिणी को साया दे जिसकी जकड मे हजारो प्रजा तडपेंगी! धरती की नसा का जहर ताल तलैया को सुखा दे और कवष उस विषकन्या के विकराल नतन को सहारा दे ऐसा क्या? धरती विषकन्या। धरती उन्मत्त देवी! कौन कौन है वह?

शुक्राचाय राजन, आप फिर दुविधा के फेर म पड रहे हैं—सम्हलिए सम्हलिए।

पृथु (उसी धुन मे) उन्मादिनी धरती! कौन? और और कवष! (हठात सचेत हो जाता है मानो कोई राह मिली हो। स्थिर स्वर) नही आचाय! कोई दुविधा नही! मैं उस विनाश-लीला को नष्ट करूगा! मैं भूचण्डी का वध करूँगा (धनुष और खडग हस्त मे लेकर) तुम्हारा रक्षक तुम्ह बचा नही सकता।—कापो, थर थर कांपो, उन्मादिनी धरती, क्योकि तीनो लोको मे कही तुम्ह स्थान नही मिलेगा! चलिए मुझे माग पर छोड आइए शुक्राचाय! अधेरे की जजीर टूटकर रहेगी। चलिए।

(पृथु के साथ शुक्राचाय का प्रस्थान। अत्रि को गग रोकता है।)

गग सुनिये, आचाय अत्रि क्या यह ठीक हुआ?

अत्रि विलक्षण बुद्धि है शुक्राचाय की। एक ही झटके म प्रजा के

असीम स्नेह और लोकप्रियता से पृथु को दूर फेंक दिया।
भृगुवंशी, तुमसे पार पाना मुश्किल है।

गर्ग लेकिन उस पिशाचलीला के जादू को राजा का पराक्रम काट भी सकेगा ?

अत्रि पृथु को जाना ही था गर्ग मुनि ! जाना ही था।

(अर्चना का तेजी से प्रवेश)

अर्चना कहा गये हैं आर्यपुत्र ?

अत्रि सरस्वती पार रेगिस्तान म अनाय खँडहरो की ओर।

गर्ग तुम्हारे योग्य वह यात्रा नही है बेटी !

अर्चना पिताजी, स्त्री की सुकुमारता अलकार है, व धन नही। आर्यपुत्र की किस समर यात्रा मे मैं उनके साथ नही गयी ?

अत्रि यह समर नही है रानी ! इस अभियान मे राजा को अकेले जाना है, बिलकुल अकेले।

अर्चना तब तो मैं निश्चय ही जाऊँगी। मेरे बिना उनके रीते मन मे आशकाओ और दु स्वप्नो का जमघट होगा। मैं जा रही हूँ। (जाती है।)

गर्ग अर्चि, अर्चि ! (पीछे पीछे प्रस्थान)

अत्रि धन्य है शुक्राचाय, तुम्हारी शुक्रनीति। प्रजा अब हम लोगो की मुट्ठी मे होगी। भृगुवंशी, मानता हूँ तुम्हारा लोहा।

(प्रस्थान और अन्धकार)

अर्चना गो ?

पृथु हां, गौ। और मैं व्याघ्र की तरह उस पर टूटने ही वाला हूँ। वह भाग रही है। सारे भूमण्डल, स्वर्गलोक, पाताल लोक—तीनों लोकों में कहीं उसे आश्रय नहीं मिलता, क्योंकि मेरा शर उसका पीछा कर रहा है। भयातुर, क्रन्दन करती हुई गौ और उसके पीछे मैं—आग्नेय नेत्र और खिंची कमान! शिखरों पर घाटियों में, सागर पर, वायुमण्डल में, पर्त पर-पर्त—ऊंचे और ऊंचे! धवल हिमगिरि की मेखला को घेरे हुए मटमैले वायुमण्डल में उस गौ का आकार फिर बदल जाता है।

अर्चना फिर बदल जाता है?

पृथु एक स्त्री की आकृति!

अर्चना वही, नग्न चण्डी?

पृथु नहीं।

अर्चना तब?

पृथु (रुककर) कोई और नारी! पहचानी सी और फिर भी अपरिचित-सी। धूमिल भी और स्पष्ट भी!

अर्चना और आप धनुष झुका लेते हैं?

पृथु नहीं! मैं तीर छोड़ना चाहता हूँ छोड़ नहीं पाता! और वह वह स्त्री कुछ कह रही है। जोर जोर से—और फिर भी मैं सुन नहीं पाता! और मैं मैं भी बोलना चाहता हूँ पर शब्द फूटते नहीं फूटते नहीं! एक अजब बेचैनी, क्षोभ की, विवशता की और तब तब तुम!

अर्चना हां, मैं! मैं जो असलियत हूँ, स्वप्न नहीं।

पृथु अजीब बात है अर्चना, कि असलियत खोज की पगडण्डियां को गायब कर देती है।

अर्चना क्या थे उस मायाविनि के शब्द?—फटकार या विनती?

पृथु कौन शब्दवेधी बाण उन्हे भेदकर अथ निकाल लायेगा ?
अचना अथ मैं हू, आयपुत्र ! सपने मे शब्द जो आपने देखे, वे मरीचिका हैं—वालू के ऊपर पानी की झूठी झलक।
पथु क्यप इस झूठ, इस मरीचिका की रक्षा कर रहा है। क्यो ?

(नेपथ्य मे एक समूह स्वर, पहले अत्यन्त मन्द और दूर। क्रमश निकट और गम्भीर। लगता है अनेक मजदूर किसी भीषण प्रयास मे लगे हैं और जोर लगाने के लिए लयात्मक सामूहिक शब्द कहते जाते हैं। पर दूर से शब्द स्पष्ट नहीं है, इसलिए ऐसा भी लगता है मानो किन्हीं भीषण मन्त्रों का डरावना गान होता हो।)

अचना आयपुत्र ! सुना आपन ?
पथु (मानो जागकर) क्या ?
अचना सुनिए—यह आवाज़ ! (आवाज निकट आ रही है।)
पृथु मन्त्र ! पिशाचिनी चण्डी के पूजन के मन्त्र ! ! अचि, यही है वह स्थान ! तुम पीछे आ जाओ ! हम छिपकर देखेंगे।

(पथु और अचना एक तरफ कोने मे छिपकर खडे हो जाते हैं अँधेरे मे।

दूर टीले पर कुछ पुरुषो की पक्ति। आकृतिया 'सिलुएट' की भाति दीख पडती हैं। उन लोगों के कन्धों पर एक लम्बी रस्सी जिसका दूसरा छोर टीले के नीचे होने से अदृश्य है। इसी रस्सी द्वारा मानो कोई भारी पदाथ खींचा जा रहा है। सबसे आगेवाला व्यक्ति, पक्ति की ओर मुह करके हाथों से बढावे के लिए इशारा करता है और स्वर भी उठाता जाता है। आवाजें कुछ ऐसी हैं—हेईसा ! खींचो भाई ! हेईसा ! नीचे झुककर ! हेईसा ! चलता चल, हेईसा ! थोडा और, हेईसा !'

दूसरे कोने में नटी और सूत्रधार पर हल्का प्रकाश पुंज पड़ता है।)

नटी

सूत्रधार! कौन हैं ये लोग क्षितिज के कोने में उभरते केवल छायाओं की तरह?

सूत्रधार

नटी, ये जुटे हैं कब से इस धरती की मेहनत में। कैसी अजब पूजा है यह?

नटी

कौन है इनका अगुआ जिसकी आवाज की लीक पर जुलूस बढ़ रहा है?

सूत्रधार

कौन है पूजा का पुरोहित? लेकिन ये लोग तो रुके नहीं, बढ़े जा रहे हैं दूर! क्या पशु इन पर हमला नहीं करेगा?

(पंक्ति दूर जाकर ओझल हो जाती है। तीन स्त्रियों का प्रवेश। पहली, एक भयानक मुखौटा पहने अपने सिर पर एक घड़ा लिये है जिस पर है, [illegible] की मूर्ति—मोहेंजोदड़ो की मातृका। उसके पीछे दूसरी स्त्री जिसके चेहरे को उसके बिखरे बाल छिपाये हैं। उसके पीछे तीसरी स्त्री भी मुखौटे पहने है और चीमटे का सा वाद्य-यन्त्र लिये जिसे वह हलके हलके बजाती जाती है।)

नटी

उधर देखो, तीन औरतें। आगेवाली के सिर पर घट और

सूत्रधार

भूचण्डी की मूर्ति ! यही तो है भूचण्डी ! और उसके पीछे बिखरे बालो के नीचे किसका उन्मत्त चेहरा छिपा है ? कौन है यह ?

नटी

ये तीनो तो रुक गयी। मूर्ति नीचे रख दी। देखो देखो ! यह क्या हो रहा है ?

(घडे और मूर्ति को बीच मे रखकर तीन तरफ तीनों स्त्रियाँ बठ जाती हैं। बालोवाली स्त्री की पीठ दशको की तरफ है। वह घुटनो के बल बैठी है और कमर से ऊपर अपने बदन को घुमाव दे देकर उसी तरह हिलाती है जैसे गावो में 'ओझा' के सामने वह स्त्री जिस पर 'देवी चढती है।' क्रमश उसका आवेश बढता ह, बदन तेजी से घूमता ह, चीमटे की आवाज भी त्वरित होती जाती ह और तीसरी स्त्री की ताली की ध्वनि भी।)

सूत्रधार

भूचण्डी की पूजा ! चण्डी उस स्त्री पर चढ गयी है। और वह बेतहाशा घूम रही है।

नटी

तेज ! और तेज भयानक है यह लीला ! पृथु अकेला उस ओर बढ रहा है भ्रकुटि तनी है, आँखो मे बिजली की मौन तडप !

सूत्रधार

हाथो मे खिची कमान, उगलियो मे आतुर तूफान।

(आराधिकाओं का कोलाहल तीव्र है। पृथु अकेला टीले की ओर बढ़ता ह और कड़कती आवाज़ से इस कोलाहल को भेदता हुआ बोलता ह।)

पृथु बन्द करो! बन्द करो यह पिशाच लीला!

(वे लोग रुकतीं नहीं, न इस ओर ध्यान देती हैं। पृथु और ऊपर चढ़ता ह।)

भूचण्डी, तेरा काल आ पहुंचा।

(वही कोलाहल)

भूचण्डी, तेरे सताये हुए, सहस्रो भूखो प्यासो की आह तेरे कोलाहल को डुबो देंगी!

(वे लोग इस पर भी नहीं थमतीं।)

मायाविनि, तूने सपना के जाल म मेरे प्रतिशोध की झंझा को रोकना चाहा। लेकिन अब सावधान! (कमान खींचता हुआ) यह बाण तेरा काल

(हठात दूसरी स्त्री, जो दशकों की ओर पीठ किये ह, झूमना बन्द करके उठ खड़ी होती ह। शेष दोनों स्त्रियाँ अपनी अपनी ध्वनिया बन्द कर देती हैं। पथु अचकचाकर रुक जाता ह।

स्त्री मुड़ती ह केश हटाती ह और उसके शान्त, विकारहीन, दपशील चेहरे को प्रकाश का ज्योतिमण्डल घेर लेता है।)

पथु तुम! तुम उर्वी!

उर्वी करो मेरा वध। मेरे ही शरीर मे तो देवी समा गयी है। वध करो मेरा!

पथु दवी? यह नग्न मूर्ति? यह (घड़े के ऊपर रखी मूर्ति पर प्रखर आलोक) बीभत्स दानवी जिसकी जिसकी उफ!

उर्वी कहो! कहो! जिसकी कुक्षि मे स वृक्ष निकल रहा है हा, पथु, मैं इसे ही कह रही हूँ—देवी! अच्छी तरह देखो,

पृथु, यह न पिशाचिनी है, न मायाविनि, न भूचण्डिका।
यह है मा।

पथु मा ?

उर्वी मा ! भूमाता, धरती मा ! जननी जिसकी देह मे से कोटि कोटि सन्तान के लिए उदय होती है, हरियाली ! कुक्षि मे से निकलता हुआ यह हरा भरा वृक्ष !

पृथु हरियाली ! (किंचित व्यग्यात्मक हँसी) बहुत खूब उर्वी ! हरियाली ! आओ मेरे साथ ! मैं दिखाऊँगा तुम्हे इस माता की करतूत ! हरियाली ? ब्रह्मावत म अब एक ही रग है—भूरे रग की मिट्टी बिना पत्तियो के भूरे वक्ष धूप और सूखे से मुरझाये भूरे मुखडे !

उर्वी पानी ?

पथु बरसना है, लेकिन टिकना नही !

उर्वी जडी-बूटी ?

पथु मिलती हैं, पर उनम रस नही।

उर्वी पशुधन ?

पृथु चरते विचरते हैं पशु पर कहाँ है दूध-घी ?

उर्वी मै जानती थी !

पथु सब कुछ उसन अपने गभ म खीच लिया है जिसे तुम मा कहती हो। बाहर बचा है केवल क्षुधातुर और दीन प्रजा का करण क्रन्दन !

उर्वी पृथु, मैं जानती थी कि यह सब होना है।

पथु इस पर भी तुम आयी हो यहा—इन टीलो के बीच भयकर मन्त्रा और उच्चाटन द्वारा देवताओ के वरदान को नष्ट-भ्रष्ट करने के लिए ?

उर्वी नही।

पृथु आश्रमो म यज्ञ का धुआँ उठता है, लेकिन इन्द्र, वरुण, अश्विनि कुमार मरुत, कोई भी देवता हमारी सहायता नही कर पाता !

उर्वी देवता ?

पृथु (न जाने किन भटकी यादों के प्रवाह में) एक दिन था कि हिमालय की घाटियों में विपाशा के तट पर भोर के तारा की छाया में मेरे साथ तुम भी इन देवताओं का आह्वान करती थी।

उर्वी (बहती-सी बहकती सी) तारा की छाया मे !

पृथु या जब उगते सूरज से होड करनेवाला अल्हड चाँद अपनी आभा के चँदोवे को सिमेटता नही था !

उर्वी अल्हड चाँद !

पृथु भूल गयी—उर्वी ?

उर्वी (भावुकता की तरल धारा सहसा बर्फ बन जाती है) राजा पृथु, भूली हुई सुगन्ध के डोरे छोडो !

पृथु (चौंककर) ऐं !

उर्वी ब्रह्मावर्त के महाराज पृथु तुम्हारे देवता अधूरे हैं !

पृथु (किंचित मौन के बाद कठोर होते स्वर मे) इसलिए कि इस भूचण्डी के नासपुटों से जो विषैली आँधी उठती है वह देवताओं को उतरने नही देती। मैं इसका विनाश करूँगा।

उर्वी नही, नही राजन् ! तुम्हारे देवता अधूरे हैं इसलिए कि आसमान के देवता धरती मां के कन्धा के बिना पंगु रहेंगे, पंगु निर्जीव, निर्बल !

पृथु आर्यों के देवता निर्बल हैं, और और अनार्यो की यह विद्रूपा मां शक्तिशाली है ?

उर्वी तुम राजा हो। आर्य और अनार्य, नाग और निषाद, सभी का ताना बाना ही तो तुम्हारा राजवस्त्र है। इन्हें मिलाओगे तो समाज का आधार मजबूत होगा, अलग रखोगे तो समाज भी टूक टूक होगा और धर्म भी !

पृथु धर्म ! क्या जो उन्मत्त लीला तुम अभी-अभी कर रही थी,—और, और टीले के ऊपर वे चलती हुई शक्लें—एक

के पीछे एक चुकी हुई छायाएँ—क्या वह सब धम का आचरण है ? उर्वी, दस्युओ के खँडहर मे तुम्हारी बुद्धि भी जड हो गयी क्या ?

उर्वी हाँ मैं जड हूँ क्योकि यह वसुधा, यह धरती, जड है और मेरी नस-नस मे यह समा गयी है । मेरी बात सुनो, क्योकि मैं वह नही हूँ जिसे तुमने त्रिगत मे जाना । मैं धरती की आवाज़ हू, धरती जो बहुत कुछ देती है बहुत-कुछ सहती है

पृथु धरती जिसने आज सब कुछ छिपा रखा है—अन्न, पानी, धन, जिसका दिल पसीजता नही, सैकडो भूखी प्रजा को देखकर—जिसकी बजर कोख मे जीवन का स्पश ही नही है ।

उर्वी जानते हो क्यो ? राजन् मैं बताती हूँ क्यो । (ऊँचे टीले पर से क्षितिज की ओर इशारा करती हुई) वह देखो! दिग्दिगन्त तक फैले हुए ये टीले, ये ढलान, ऊँची नीची भूमि, कही भी समतल नही, जगह जगह पत्थर और शिलाएँ। वर्षा होती है, पानी गिरता है—कभी मूसलाधार, कभी बौछार, लेकिन मिट्टी गीली भी नही हो पाती। सब बह जाता है उपजाऊ मिट्टी, और मिट्टी का धन, क्योकि तुमने और तुम्हारी प्रजा ने ज़मीन को समतल बनाकर उपज करने की तो कोशिश ही नही की ।

पृथु उसकी जरूरत ही कहा पडी ? हम लोग तो हर साल वैश्वानर अग्नि से नये जगल जलाते ह। जली हुई धरती पर उपज करत हैं।

उर्वी यज्ञो स जली हुई मिट्टी को शीघ्र वर्षा का पानी बहा ले जाता है। तब

पृथु तब, फिर यज्ञ, फिर दावाग्नि और फिर नयी मिट्टी। यही तो आय परम्परा है।

उर्वी जानती हूँ यही आय परम्परा है। राजन्, इसीलिए ब्रह्मा-

वत मे सूखा है, अकाल है। तुम भूचण्डी का वध करने आये हो। लेकिन भूमाता के जिस वक्ष का जला जलाकर तुमने सुखा डाला उसकी आवाज़ तो सुनो! राजन्, तुम कहते हो धरती न अपना धन छिपा रखा है वह बीज को ग्रस लेती है वह न हरियाली देती है न दूध! लेकिन स्वय तुम लोग करत क्या हो?—यज्ञा की अग्नि की स्तुतिया!

पृथु यना की अग्नि म ही तो उपज ह। मेरा यह आजगव धनुप यज्ञा का रक्षक है।

उर्वी राजन सबस बडा यज्ञ तुम्ह अब करना है।

पृथु मुझे?

उर्वी हाँ!—उठाओ यह धनुप और इसकी कोटि से उखाडो शिलाआ को, ऊँचे नीचे टीलो को समतल करो। खेती म पानी ठहरेगा। मिट्टी म नमी आयेगी। हरियाली फैलेगी। बालू से रुकी हुई नदियो की धाराएँ फिर बह निकलेंगी।
और तब सवकाम दुहा गो की धरती माँ के स्तना म सकडो मानव सतान के लिए दूध उतरेगा।

पृथु गो! कौन थी वह गो जो स्वप्न म मेरे सामने आयी?

उर्वी तो माँ न तुम्ह स्वप्न मे दशन दिय राजन्? क्या कहा?

पृथु क्या कहा, क्या कहा—यही तो याद नही।

उर्वी मैं बताती हूँ राजन! धरती मा न कहा होगा—मैं गो हूँ, लेकिन मुझे दुहनेवाला कहा है? और मेरे योग्य बछडा और दोहनपात्र, जिसमे मेरे दूध की धाराएँ एकत्र हो!
तुम राजा हो, प्रजा के नता हो। तुम्हारा पुरुषाथ सिफ युद्ध और सघप म ही तो नही है। मैं वसुधरा हूँ, मुझे दुह कर अभीष्ट वस्तुआ को निकालने म भी तुम्हारा पुरुपाथ है और तुम्हारी प्रजा का धम है। तुम आयकुल के पहले राजा हो। ह राजन कमपुरुप बनो!

पृथु क्या भूल गया य शब्द मैं? क्या? क्या?

उर्वी इसीलिए तो मा तुम्हे यहा खीचकर लायी है कि तुम देख सको कि वे, जिन्हे तुम अनार्य कहते हो, दस्यु कहते हो, जिनके नगरो को तुमने खँडहर बना दिया—वे कैसे धरती का दोहन करते है। तुमने देखा ?

पृथु वे झुकी हुई शक्लें ?

उर्वी हा, वे लोग सरस्वती की सूखी धारा मे एक यन्त्र के द्वारा नहर खोदकर जल निकाल रहे थे।

पृथु वे दस्यु ?

(कवष और एक अन्य पुरुष का प्रवेश, जिसके सिर पर जल से भरा एक घडा है।)

पृथु कवष !

कवष पृथुराज ! आ गये !

पृथु मैं तुमसे युद्ध करने आया था कवष !

कवष युद्ध ! (भूचण्डी की मूर्ति को उठाता है। दूसरा पुरुष जल को पहले घडे मे डालता है। कवष मूर्ति को पुन रख देता है। पुरुष खाली घडे को लेकर चला जाता है।) इस समय तो मेरे रक्त की अपेक्षा तुम्हे शायद वह जल ज्यादा कीमती लगे।

पृथु कवष, उस दिन तुमने मेरा सेनापति बनने से इन्कार करके ठीक ही किया। लेकिन आज

कवष मेरी सेना तुमने देखी ? सैकडो ने मिलकर उस यन्त्र को चलाया और सरस्वती के सूखे वक्षस्थल मे नहर की रेखा खिच गयी।

पृथु तुम्हारी प्रतिज्ञा पूरी हुई कवष ! सरस्वती के अन्तस के पावन जल का आचमन तुमने किया ! आश्रम मे मुनिवृन्द तुम्हारा स्वागत करेंगे।

कवष मुनि ? क्या मुनियो के मन्त्रमण्डल मे मुझे बिठाना चाहते हो राजन ?

पृथु मन्त्रमण्डल नही पुरुषार्थमण्डल ! (हठात एक उदास

आलोक टीले को प्रदीप्त करने लगता है। पृथु का स्वर मानो उस ज्योति का स्रोत है और कवष के शब्द उसके आभामण्डल। हरेक वाक्य मानो संकल्प की दृढ़ता और सपनो के उल्लास की टंकार है।) कवष, भूमिरूपा गौ को दुहने के लिए अनेक मजबूत हाथ उठेंगे, भिन्न भिन्न प्रकार का दूध निकालेंगे। अनाज रूपी दूध को मैं दुहूंगा, हलधर किसान बछड़ा होगे, हाथो की अंजलि दोहनपात्र होगा।

कवष जल रूपी दूध को मैं दुहूँगा प्यासे खेता का बछडा होगा, नदी और तालाब पात्र होगे।

(जसे जसे दोहन प्रकारो का वणन होता है, तसे-तसे उर्वी के पीछे एक एक करके स्त्री या पुरुष घट लेकर वत्ताकार खडे हो जाते हैं।)

पृथु सोना, चादी, तावा इत्यादि धातुओ को व्यापारी दुहेगे, शिल्पियो का बछड़ा होगा, अलकारो का पात्र।

कवष विलासी लोग मदिरा-रूपी दूध का दुहेगे, मधुशाला का वत्स होगा, मधुबाला का पात्र।

पृथु ज्ञानी लाग गुरु को बछडा बनाकर, वाणी रूप पात्र मे वेद-रूपी दूध को दुहगे।

कवष कलाकार लोग गन्धव अप्सराओ को बछडा बनाकर कमल रूपी पात्र मे सगीत और सौन्दय का दूध दुहगे।

पृथु कौन नही होगा दोहक? सिद्ध और पितगण, यक्ष और दैत्य, पशु और जीव जन्तु, वृक्ष और पवत! ओ विश्वरूपा वसुन्धरे! अपने बाहुबल से मैं तुझे समतल करूँगा अपने पुरुषाथ से सबको जुटाकर तेरी अनन्त सम्पदा को मानव-मात्र के लिए प्रस्तुत करूँगा।

उर्वी गाओ, गाओ उल्लास का गीत, क्योकि पृथु राजा भूखे और अकाल का चक्रव्यूह तोड रहा है। (उर्वी के पास खडे स्त्री-पुरुष अत्यन्त मन्द स्वर में गीत की धुन गुनगुनाना प्रारम्भ करते हैं।)—प्रयास का गीत, क्योकि धरती की अनन्त

सम्पदा का दोहन शुरू हो रहा है (गुनगुनाहट बढती ह।)
विश्वास का गीत क्योंकि पृथु ने धरतीमाता की गन्ध पहचान
ली है और उसे नया नाम दे रहा है—पृथवी ! पृथवी !
(गीत मुखर हो उठता ह।)

समूह गीत

नीला था आसमान, नीला वितान
नील सरोवर म खिली अजान—
अनदखी सोनजुही !

नशीली थी आँख, रगो की पाख
नाहक किसी ने दिया ढाक—
अनदेखी सोनजुही !

मिली फिर भी टोह, टूटा न मोह,
मिट्टी की गन्ध ! तो कैसा विछोह ?
धरती की गन्ध बसी मेरे मन मे
अनदेखी सोनजुही !

(ज्यों ज्यो गीत तेज होता ह त्यो त्यो टीले पर के
समूह और अन्य व्यक्तियो पर अँधेरा छा जाता ह,
केवल पथु दीख पडता ह।
और नीचे कोने में से एक और आकृति उभरती ह,
एकाकी और सम्भ्रम—अचना। समूह गीत की
आवाज को लाघता हुआ अचना का स्वर सुन पडता
ह)

अचना आयपुत्र ! आयपुत्र, कहाँ खो गये थे आप ?

पृथु कौन, अचना ? मैं यहा हूँ अचना !
(सगीत मन्द हो गया ह।)

अचना आयपुत्र ! राजन् !

पथु आओ, ऊपर आओ ! मैं भी मिल गया और तुम्हारी सखी
भी !

अचना (बढ़ती हुई) सखी ?

पृथु उर्वी !

अचना उर्वी (ठिठककर रुक जाती है।) नहीं नहीं ! (हाथों से मुह ढँकती है।) नहीं !

(सगीत बन्द ! और अँधेरा)

अन्तराल

(थोडी देर बाद प्रकाश नटी और सूत्रधार पर)

सूत्रधार

दो बरस बीत गय, नटी, दो बरस !

नटी

हा, सूत्रधार इन दो बरसो मे क्या से क्या न हो गया !

सूत्रधार

ब्रह्मावत की भूमि की काया पलट हो गयी। जमीन समतल हो गयी, मिट्टी की मसें भीगी, खेतों म धान लहलहाया ! गाव बस बसवे और पशुशालाएँ भी। खानें सोना उगलने लगी।

नटी

आश्रम भी तो दो हो गय।

सूत्रधार

हा, एक अत्रि मुनि का और दूसरा गुराचाय का, दोनो की सम्पत्ति बढी, धन भी और

नटी

लालच भी !

सूत्रधार

ऐसा ही होता है नटी ! लेकिन भृगुवशी और आग्नेय वशी दोनो की तृष्णा के लिए गुजायश है। सरस्वती की सूखी धारा मे जो छोटी-सी नहर कवप न शुरू की थी, उसका विस्तार हो रहा है और दाना ही आश्रमा के सकडा लोगो को काम मिला है।

नटी

नहर कहा तक खुदेगी ?

सूत्रधार

वहाँ जहाँ दृषद्वती की धार से सरस्वती का सगम था।

नटी

और तब सदा के लिए सरस्वती को दषद्वती से पानी मिलता रहगा, नहर के सहार हर मौसम म खेत भरपूर रह सकेंगे, हर आश्रम म आचमन के मन्त्र गूजेंगे।

सूत्रधार

बशर्ते कि बरसात मे दषद्वती की धारा सरस्वती से मुह न मोड ले।

नटी

ऐसा न कहा सूत्रधार, ऐसा न कहो।

सूत्रधार

प्याज की गाठ छीलते म जैसे एक के बाद एक पत निकलता जाता है, एसे ही पथु के सामने समस्याएँ उभरती जाती हैं।

नटी

पथु को चैन नहीं है, फिर भी उसका मन शिथिल नहीं है उसका शरीर थका नहीं है।

सूत्रधार

इसलिए कि हर समस्या उसके लिए चुनौती है और हर चुनौती का सामना करते समय पथु का तन मन यज्ञ की वेदी बन जाता है। इस बरसात से पहले अगर दृषद्वती की धारा को मोडनेवाला बांध तैयार हो जाय तो पथु का सौवां यज्ञ पूरा हो जायेगा।

नटी

पूरा होगा! तुमने निन्यानवे प्रकार से धरती को दुहा, पथु! तुम्हारा सौवां अनुष्ठान भी पूरा होगा, चक्रवर्ती पृथु!

सूत्रधार

चक्रवर्ती! बिना युद्धों के चक्रवर्ती, बिना अश्वमेध का चक्रवर्ती!

(मंच पर क्रमश उजाला। स्थानेश्वर में पहले अंक की पृष्ठभूमि। पृथु और अर्चना। पथु की व्यस्त और मुस्तैद मुद्रा।)

पृथु रानी, तुमने तो गर्ग मुनि से परसों कह दिया था कि जितने भी आदमी अपने आश्रम के आसपास गांवों से जुटा सकें तुरंत उन्हें बांध पर भेज दें।

अर्चि जी!

पथु अजब बात है कि अभी तक पहुंचे ही नहीं। उर्वी और कवष के संदेश पर संदेश आ रहे हैं कि तुरंत तीन सौ आदमी

भेजो। समय नही है। हिमालय म वर्षा के समाचार मिले हैं। इधर आकाश से बूदाबूदी शुरू हो गयी है। बाध का थोडा ही हिस्सा बनने को रहा है। एक एक क्षण की देर खतर को निकट ला रही है। क्यो नही पहुँचे लोग ?

अर्चि उनकी कुछ कठिनाई है ?

पृथु किसकी ?

अर्चि पिताजी और अत्रि मुनि की।

पृथु आत्रेय आश्रम के आसपास किसान प्रजा की तो कमी नही।

अर्चि अत्रिमुनि ने सुना है कि बाध पर काम करने के लिए जो अनाज किसाना को दिया जा रहा है उसकी मात्रा से उन्ह सन्तोष नही।

पृथु किसे सन्तोष नही ? किसान प्रजा को या आश्रमवालो को ?

अर्चि शायद दोना को।

पृथु इसीलिए तो मैंने आश्रम को ही अनाज बाटने का जिम्मा दे दिया था। अगर अनाज की मात्रा कम है तो और दे। आश्रम के भण्डार म से ही दे दें, मैं पूरा कर दूगा लेकिन उन्होंने प्रजा को समझाने की कोशिश की हो तब न ?

अर्चि अत्रि मुनि क भाषण तो अत्यन्त प्रभावशाली होत है।

पृथु लेकिन कब ? आज उनसे कह कि एक बडा जुलूस निकालिए—दस्युओ के खिलाफ। तो देखना कसे जोशीले शब्दा मे अपन इलाके की प्रजा का आह्वान करते है—पर हमार सामन तो चुनौती दूसरी ही है। नही, ऐसे कैम काम चलेगा ! शुक्राचाय से कहता हूँ भृगुवशी आश्रम मे ही तीन सौ जन का इन्तजाम करें।

अर्चि क्या वह ठीक होगा ?

पृथु क्यों ?

अर्चि आपन भृगुवशी आश्रम को टोकरियो और कुदालियो के लिए ठेका द रखा है। अगर उन्ही के कमकार किसानो की

तादाद भी बाँध पर बढ़ा दी गयी तो भगुवनी आश्रम की आमदनी और भी बढ़ जायगी।

पृथु आमदनी ! इन आश्रमों को तो बस अपनी आमदनी की फिक्र है ! और अगर यह बाँध ठीक समय पर पूरा न हुआ तो ? नहीं अर्चि, तुम उन लोगों की वकालत मत करो ! मुझे कवष और उर्वी की बुद्धि और सामर्थ्य में विश्वास है पर तुरन्त उनके पास किसान मजदूर पहुँचाने होंगे।

अर्चना आप स्वयं भी जाइयेगा ?

पृथु अवश्य ! चलो तुम भी। अपनी सखी से मिली नहीं हो इतने दिन से। (जाने को उद्यत)

अर्चना सखी !

पृथु (सोचता-सा लौटकर) क्या बात है अर्चि ? तुम उदास ही नहीं, बदली हुई-सी लगती हो।

अर्चना आप नहीं बदले हैं ?

पृथु कहीं भी तो नहीं ? (फिर मानो समझकर, हँसते हुए) ओह ! चाहती हो, भुजाओं में भुजा रहें,—कुसुमों की लता और वृक्ष ! पगली (गाल पर हलकी सी चपत लगाता है) लेकिन यह यज्ञ ? सौवाँ यज्ञ ?

अर्चना जिसकी आहुति दे रही है—उर्वी !

पृथु देखो तो सही चलकर,—उर्वी और कवष ने क्या क्या किया है। उन्नत भाल सा वह विशाल बाँध !—जब वह पूरा होगा और बाढ़ में गरजती दृषद्वती का जल अंकुश लगे गज की तरह आहिस्ता आहिस्ता सरस्वती की नहर में अग्रसर होगा। (हठात चौंककर) अरे, कितनी घड़ी बिता दी मैंने बातों में। शुक्राचार्य से तुरन्त तीन सौ कमकारों का इन्तज़ाम कराना है।

(प्रस्थान)

अर्चि एक समय था कि अकुश मेरे हाथा मे था। क्या नही उठते कदम मेरे ?

(अत्रि और गर्ग का प्रवेश)

गर्ग कहा तुमने ?

अर्चि हाँ ! वे गये हैं शुक्राचार्य से कहने।

अत्रि क्या ? भृगुवशी आश्रम से तीन सौ मजदूर जायेंगे ?

अर्चि यही कहने गये है। बाध का काम तुरत पूरा होना है।

अत्रि घोर अन्याय है। भृगु आश्रम ही को ठेका मिले सामान तैयार करने का और भृगु आश्रम की ही आमदनी बढाई जाये अतिरिक्त मजदूरो को भेजकर।

गर्ग अर्चि, तुमने समझाया नही ?

अर्चना पिताजी,-मैं इस विवाद मे नही पड सकती। आर्यपुत्र चिंतित हैं कि आप लोगो ने अभी तक मजदूर नही भेजे। बाध पूरा नही हुआ तो सौवा यज्ञ भी पूरा नही होगा।

(प्रस्थान)

अत्रि भृगुवश की कुटिलता की भी कोई हद होनी चाहिए।

गर्ग वैसे हम दो सौ आदमियो को तो फौरन भेज ही सकते हैं।

अत्रि कोई जरूरत नही। बल्कि हम उन मजदूरो को भी वापस बुला लें जो इस समय काम कर रहे हैं।

(शुक्राचार्य का प्रवेश)

शुक्राचार्य जरूर बुला लीजिये।

गर्ग शुक्राचार्य, राजा तो सुना है आप ही से तीन सौ मजदूरो की माग करने के लिए गये है।

शुक्राचार्य इसीलिए तो मैं इधर चला आया।

अत्रि भृगुवश की चाल को राजा क्या समझेगा ! लेकिन हम समझते हैं, शुक्राचार्य ! तीन सौ मजदूरो को इकट्ठा वहाँ भेजकर आप हमारे आश्रम के मजदूरो की दर कम कर देना चाहते हैं।

शुक्राचार्य क्या बुराई है ! वह सब अनाज मजदूरो के पास तो पहुँचता

नही है। अत्रि, आपके आश्रम के भण्डार मे सुनता हूँ अब जगह ही नही है।

अत्रि कितनी टोकरिया और कुदालिया पहुँचा, आपने शुक्राचाय? सुना है जितनी के लिए आपने पदवी ली थी, उसकी आधी भी नही पहुँची। इतना सारा धन हजम करने की शक्ति भृगुवशियो मे ही है आचाय!

गग सुनिये, सुनिये! शुक्राचाय! अत्रिमुनि! यह सब झगडा निपटाया नही जा सकता क्या?

अत्रि हो जाने दीजिए आज साफ बातें! हम किस भण्डाफोड से डरे है? हमारा आत्रेय आश्रम तो जनता के कल्याण के लिए, जनता के कधो पर टिका है।

शुक्राचाय हूँ! कितनी जनता को आपने खरीद रखा है?

अत्रि जनता को खरीदने की मुझे जरूरत नही है। मेरी वाणी की चिनगारी विशाल जनसमुदाय को प्रज्ज्वलित कर सकती है।

शुक्राचाय जानता हूँ आप वाग्वीर है जबान की तेजी ही आपके खड्ग की धार है। लेकिन हे वाग्वीर, क्या उस उद्योगवीर के आगे आपकी चल सकेगी?

गग कौन?

शुक्राचाय राजा पृथु और कौन?

अत्रि आप चाहते हैं कि मैं बठे बिठाये राजा से झगडा मोल लू, और आप मजे से तमाशा देखते रहे? इतनी मोटी बुद्धि का नहीं हूँ!

शुक्राचाय अत्रि मुनि तो मेरी तीक्ष्ण बुद्धि की बात सुनिए ध्यान देकर! पृथु को हमने पराक्रमी वीरश्रेष्ठ और योद्धा के रूप मे अभिषिक्त किया! लेकिन वह बन बैठा है उद्योग-वीर। यह वह राजा नही है जिससे हमने कुशा की गाठो पर वचन लिये थे जिसके तेज बाणो से सैकडो दस्यु कट मरे थे। वह भी नही जिसने हमारा मन्त्रिमण्डल बनाया।

गग लेकिन हमारे आश्रमा की आमदनी तो बढ रही है। धन-धान्य तो हमारे हाथ आ रहा है। चिन्ता क्या है?

शुक्राचार्य गर्ग मुनि, चिन्ता? आत्रेय आश्रम और गर्ग आश्रम दोनों अच्छी तरह समझ लें कि दृषद्वती का यह बाँध पूरा होते ही—सौवें यज्ञ की पूर्ति होते ही—राजा पृथु, हम लोगों को दूध की मक्खी की तरह निकाल फेंकेगा। और उसके मन्त्रिमण्डल में होंगे जंघापुत्र कवष और दस्युसुन्दरी उर्वी!

अत्रि (कुछ समझता हुआ) हूँ! आपका मतलब है कि हम लोगों के साथ उसकी जो शर्तें तय हुई थी

शुक्राचार्य जी, उन शर्तों का उसकी नजर में उस समय क्या मूल्य होगा जब वह जनता द्वारा चुना हुआ राजा बनेगा?

गर्ग जनता द्वारा चुना हुआ?

अत्रि लेकिन इस समय अगर राजा के विरोध में हम लोग आवाज उठायें भी तो किस आधार पर?

शुक्राचार्य आवाज उठाने का मौका आयेगा बाद में और उस वक्त फिर से आपके ओजस्वी भाषणों की जरूरत होगी आचार्य अत्रि! लेकिन इस वक्त तो तुरन्त एक बात तय हो जाये।

अत्रि बताइए।

शुक्राचार्य हम दोनों ही के किसान मजदूर और कारीगर बाँध के काम में ढील डाल दें।

गर्ग लेकिन लेकिन बाँध नहीं बन पाया तो दृषद्वती सरस्वती से हटकर सदा के लिए यमुना की ओर मुड़ जायगी।

शुक्राचार्य हो सकता है।

गर्ग इसके माने तो होगा कि इतनी मेहनत से सरस्वती की धार में जल चालू करने के लिए जिस नहर को बनाया गया है—वह सूखी रह जायेगी!

शुक्राचार्य रहे सूखी! आचार्य गर्ग!—साफ बात है, आप, दो में एक बात चुन लीजिए—अपने परिवार कुटुम्ब, कन्या अर्चना और आश्रम का भविष्य या सरस्वती की धारा में पानी,

जिसका फायदा होगा बस छोटे मोटे किसानो, निषादो और बचे खुचे दस्युओ को।

गग (अटकता सा) अगर दोनो ही बातें हो पाती !

अत्रि नही हो सकती गग ! शुक्राचाय ठीक कहते हैं। सरस्वती को सूखना ही है। वह नदी नही रही, एक ठठरी है जिस हम ऋषि मुनियो के आश्रमो के कारण ही इतना मान मिला है !

शुक्राचाय पर अब अब तो हमारे आश्रमो का भविष्य सरस्वती के तट पर नही—पूरब की ओर फैले मदानो मे है। वही जलेगी हमारे हवनो, हमारे मन्त्रो की अग्नि ! अगर पृथु को राजा बने रहना है तो वैश्वानर अग्नि के आगे आगे चले, सेना सजाकर, अपने पराक्रम की ध्वजा फहराता हुआ !

गग तो फिर ?

शुक्राचाय चलिए अभी और चुपचाप बाध के काम मे ढील कराइए। नये मजदूरो के दलो म भी छँटनी कीजिए।

अत्रि ठीक

(प्रस्थान के लिए बढते हैं कि सामने से राजा का प्रवेश। हाथ मे कुदाली जिसे कधे पर टिकाये हुए है। उल्लास और कमठता की भगिमा)

पृथु अचना ! मेरा घोडा तैयार कराओ। मेरा (मुनियों को देखकर) अरे, आचायवृन्द, आप लोग यहाँ हैं ?

गग राजन, आपके कधे पर

पृथु हा, मेरे कधे पर धनुष नही कुदाली है। इस समय यही मेरा राजचिह्न है, क्योकि मेरी सैकडो प्रजा ने मुझे इसी रूप मे स्वीकार किया है।

अत्रि कौन सी प्रजा ?

पृथु आपके आश्रम के आसपास के किसान, मजदूर, अत्रि, मुनि ! और आपके भी शुक्राचाय ! आप दोनो व्यथ चिंतित थे। वे लोग सब तैयार हो गय तुरन्त बाँध को पूरा करने के

लिए। मैंने कुदाली उठायी कि पाच सौ हाथो मे कुदालिया ललक उठी, मैंने मिट्टी ढोने के लिए टोकरी पकडी कि पाँच सौ मस्तको पर टोकरियाँ मुकुट सी सज गयी।

गुत्राचाय (हतप्रभ) पाँच सौ मजदूर।

पृथु और भी पाच सौ तैयार है। वे लोग चल भी दिये बाध की ओर। हम लोग पहुँचत ही काम म हाथ लगा देंगे और देखते-ही देखते बाँध पूरा हो जायेगा। और तव हम लौटेंगे सरस्वती की नयी बहती धारा के साथ साथ। (घोडे की टाप) यह लीजिए मेरा घोडा आ पहुचा। अचना। अचना।। (सूत और मागध का प्रवेश) कौन?

गग सूत मागध?

पृथु तुम दोना बाँध छोडकर कैसे आये, सूत मागध?

सूत हम लोग घोडे दौडाने आये हैं क्योंकि क्योंकि आपको तुरत समाचार देना था, महाराज।

पृथु कैसा समाचार?

मागध बाध नही रहा महाराज।

पृथु (वज्रपात सा) क्या?

गग क्या कह रहे हो मागध?

मागध हिमालय म घनघोर वर्षा के कारण दृपद्वती और यमुना मे प्रचण्ड बाढ आयी। बाध के सिफ एक खण्ड म मिट्टी डलनी बाकी थी। अगर एक सौ आदमी भी और होते तो बाध पूरा हो जाता और टूटने की नौबत न आती।

पृथु बाध टूट गया।

सूत दृपद्वती मुड गयी यमुना की ओर और नहर सूखी पडी है।

पृथु नहर सूखी पडी है।।

सूत सिफ सौ आदमी और होते

पृथु (वापस आती हुई ज्योति) सौ नही, पाच सौ आदमी जा रहे है, और मैं भी। उर्वी और कवष के सकेत पर काम फिर चल निकलेगा। उच्छृखल नदी की धार, तुझे फिर मुडना

होगा सरस्वती की ओर !

मागध कोई सकेत नही दे सकेगा, महाराज !

गर्ग मतलब ?

मागध उर्वी एक कगार पर खडी हुई मजदूरो को सहारा दन के लिए रस्सी फेंक रही थी ! प्रचण्ड लहरो के साथ हहराता हुआ जल टकराया और कगार गिर गया।

सूत उर्वी डूबने लगी ! पलक मारने की देर थी कि किसी विशाल चमकदार मछली की भाति कवष कूद पडा उसे बचाने। हमारी साँसें वापस आयीं।

मागध लेकिन कितनी देर को ? दूसरा कगार कवष के ऊपर ही टूटा। दोनो आखो से ओझल हो गये, महाराज !

पृथु उर्वी और कवष ! (जडीभूत सा) दोनो दोनो !!
(कुदाली हाथ से छिटक जाती ह अचना का प्रवेश)

अचना आयपुत्र ! (कुछ देर मौन। मुनि लोग एक दूसरे की ओर देखते हैं।)

शुक्राचाय (स्पष्ट स्वर लेकिन रुक रुककर) देवी महाराज पृथु को सान्त्वना मत दो ! उन्हे शस्त्र पहनाओ—धनुष, तूणीर, खडग !

अत्रि पृथ्वी अचल म शत्रु सिर उठा रहे हैं। आपके पराक्रम की फिर जरूरत है राजा पृथु ! वश्वानर अग्नि के आगे आगे चलो। चक्रवर्ती के पथ पर, जगलो को जलाते हुए, शत्रुओ का सहार करते हुए ! पराक्रमी पृथु !

शुक्राचाय (कुछ मौन के बाद) आचाय आइए ! हम लोग बाहर चलें। आओ, सूत मागध !

(पृथु और अचना को छोडकर सबका प्रस्थान। थोडी देर मौन। अ धकार के घेरे में ज्योति पृथु और अचना पर अटकी ह। धीरे धीरे अचना पृथु के क धे पर पहले तूणीर और फिर धनुष लटकाती ह। पृथु उसकी ओर पल भर को देखता ह और फिर

उसकी ओर पीठ करके थोड़ा दूर हट जाता है।
उसका 'प्रोफील' ही दीख पड़ता है।)

पृथु अर्चना! थोड़ी देर के लिए मुझे अकेला छोड़ दोगी?

अर्चना जितनी देर आप चाहें, आर्यपुत्र!

(उलटे पर प्रस्थान। थोड़ी देर मौन)

पृथु (धनुष पर हाथ फेरता हुआ) ठीक ही तो है! मैं आदि-राज पृथु, आर्यों का पहला राजा! मेरा यही स्वरूप तो सदियों बाद याद किया जायेगा, धनुषबाण से सुसज्जित देह, खड्ग की चमक से मण्डित मुख, शत्रुओं को दहलाने-वाले घोर स्वर का विधायक, पराक्रमी विजेता, दस्युओं का विनाशक, प्रजा का नायक, मुनियों का पालक—पृथु!! लोग कहेंगे पृथु अवतार था! अवतार! लेकिन इस मुखौटे के नीचे मेहनत के पसीने से चमकता चेहरा कौन जानेगा? इन हाथों में कुदाली की पकड़ को कौन समझेगा? किसे ध्यान होगा कि धरती को समतल बनाकर उसे दोहनेवाले हाथ कौन से थे? पृथ्वी! पृथु की पृथ्वी! कौन समझेगा इन शब्दों को? (टीले पर चढ़ जाता है और ऊपर की ओर दृष्टि करता है।)
ओ दुविधाओं के देवता, तू, जिसे यज्ञपुरुष कहा जाता है—तू, जिसे जगत का विधाता कहते हैं—तू परब्रह्म! मैं जानता हूँ कि शक्ति तेरी नहीं मरी है! फिर भी तेरे आगे हाथ फैलाता हूँ। हजारों टहनियाँ और शाखाएँ किसी आकाश वृक्ष पर फली हैं। मेरी निगाह अन्तरिक्ष के उस अनन्त फल फूलवाले वृक्ष से हटा दे। पृथिवी पर जो जीर्ण शीर्ण पत्ते बिखरे हैं उन्हीं में खोजने दे, उसे जो मेरी सहचरी थी, मेरी प्राण थी और, और थी मेरी माँ!
उर्वी, माँ माँ! (रुँधा मन्द होता हुआ कण्ठ) माँ!

(अँधेरा। प्रकाशपुंज नटी और सूत्रधार पर)

नटी

(गहरी साँस खींचती हुई) युगों के आगनों म इस आवाज़ की प्रतिध्वनि अनसुनी गूजती रही, सूत्रधार !

सूत्रधार

(कुछ मौन के साथ) नटी, मुझे अपनी व दना पूरी करनी है। याद है अथर्ववेद का वह सूक्त ?

नटी

पृथिवीसूक्त ?

सूत्रधार

सुनाओ तो

(नटी सस्वर गाती ह और उसी के अनुसरण में सूत्रधार अथ कहता जाता ह।)

नटी

विश्वम्भरा वसुधानी प्रतिष्ठा हिरण्यवक्षा जगतोनिवेशनी।
वैश्वानरं बिभ्रती भूमिरग्नि इन्द्र ऋषभा द्रविणे नो दधातु ॥

सूत्रधार

ह विश्व का भरण करनेवाली, रत्नो की खान, सोने से भर-पूर मातभूमि, तुम जगत का आधार हो। हमारे रत्नों का अनुकूल मन से दोहन करो।

नटी

यत्ते मध्य पृथिवी यच्च नभ्य यास्त ऊजस्तन्व सबभूवु ।
तासु नो धेह्यभिन पवस्व माताभूमि पुत्रो अहं पृथिव्या ॥

सूत्रधार

पृथिवी के केन्द्र से जो बल, जो शक्ति निकलती है उस चेतना के प्राणवायु से मैं भी स्फुरित हो जाऊँ। पथिवी के आकाश मे विचारो के मेघ मँडराते है, मैं भी उनके जल से भीग जाऊँ। भूमि माता है और मैं इस पथिवी का पुत्र हूँ।

(अन्धकार)

पृष्ठभूमि

समम्याएँ

पिछले दिना कुछ ऐसी समस्याएँ और उलझनें रह रहकर मेरे मम को छूती रही है जिनकी ओर हिन्दी नाटककारो का ध्यान कम ही गया है।

जस वह परिस्थिति जिसम कम (यानी एक्शन) मे आदमी उपलब्धि नही उपचार खोजता है। क्या पुरुषाथ भी एक तरह का यथाथ से बचने के लिए आश्रय (एस्केपिज्म) है? और क्या कमशील मनुष्य म कल्पना का उद्दीपन और अन्त करण का विवेक उसकी प्रगति को अवरुद्ध कर देते हैं?

या आदमी और प्रकृति के साधनो का आपसी रिश्ता। प्रकृति के विराट और रहस्यपूण पहलुआ को देवताओ के रूप मे देखकर मानव के स्वर म काव्य और नाटक बहुत फूटे। पर प्रकृति की कोटि कोटि सम्पदाओ को अपने इस्तमाल के लिए खोजने और उनका समीचीन उपयोग करने वाले मानव के सघर्षो और दुविधाओ मे जो 'ड्रामा' बिखरा पडा है वह क्या सवथा उपेक्षणीय है?

या किसी भी समाज के विकास मे वणसकरता की देन वम ही जैसे सकर (हाइब्रिड) बीज की उन्नत पैदावार की। फिर भी कसी है वह मूढ़ना जिसके वश होकर मानव खून की मिलावट के विरोध म खून बहाता रहा है? भारतवष के इतिहास मे आय और आर्येतर जातियो के सम्मिश्रण की प्रक्रिया भी क्या इन्ही भँवरो म होकर नही गुज़री?

या समुदाय और राजसत्ता के बीच सम्बन्धो की बुनियाद। राजा म ईश्वरीय तज क आभास के कारण य सम्ब ध निधारित हुए या समुदाय के

साथ उसका पारस्परिक हित मे समझौता हुआ ?

या महत्वाकाक्षी पुरुष मे कम की स्फूर्ति और काम (सेक्स) की बलवती लालसा का सहज सह अस्तित्व। क्या फ्रायड एव अन्य मनो विश्लेषको ने 'लिबिडो' मे कामवासना और मन शक्ति के जिस सामजस्य को पाया है उसका सकेत अनेक सस्कृत नाटको के उन नायको म नही मिलता जो श्रृगार रस मे सराबोर होते होते अनायास ही वीररस म ओत-प्रोत हो जाते हैं ?

इन मसलो को मच पर प्रस्तुत करने के लिए प्रतीका का माध्यम मुझे अधिक समथ लगा। ऐसे प्रतीक मुझे मिले एक पौराणिक कथा मे। महा भारत और पुराणो मे यह कथा इस प्रकार है।

आधार-कथा

अत्यन्त प्राचीन काल मे राजा नही थे। यह उन दिनो की बात है जब आर्यों को भारत म आये बहुत दिन नही हुए थे और हडप्पा सभ्यता के पुरातन निवासियो से उनका सघप चल रहा था। देवताओ के अनुरोध पर भगवान विष्णु ने अपन तेज से विरजा नामक एक ऐसे मानस-पुत्र की सष्टि की जो मानव समाज मे श्रेष्ठतम पद का अधिकारी हुआ। उसके बाद ब्रह्मावत (हरियाणा पजाब के सरस्वती का प्रदेश) मे चार या पाच और शासक हुए। पर सभी सन्यासी हो गये, शासक का भार उन्होने नही सँभाला।

चौथे (अथवा पाचवें—सख्या के बारे म कुछ मतभेद है) का नाम था अग। अग की पत्नी का नाम था सुनीथा जिसे 'मृत्यु की कन्या' कहा गया है। उन दोना का पुत्र हुआ 'वेन'। वन बचपन स ही उद्दण्ड और दुर्विनीत था। उसके व्यवहार से तग आकर अग एक रात सब कुछ छोडकर चुपचाप वन को चल दिय।

ब्रह्मावत म दाकुओ (दस्युओ, जो शायद हडप्पा सभ्यता के पुरातन निवासी थे) के डर से अत्रि, भृगु, शुक्राचाय, गग, वालखिल्य इत्यादि मुनियो ने सुनीथा की राय स वेन को शासक के रूप म स्वीकार किया। वेन बडा अत्याचारी था। उसन यज्ञ हवनादि व द करा दिय। वह अपन को ही

ईश्वर घोषित करने लगा। उसने ब्राह्मण इत्यादि ऊँची जाति के मुनियो की सलाह को ठुकराया और वणसकरता को बढावा दिया।

तब मुनियो ने अपने मन्त्रा, हुकारा और मन्त्रपूत कुशा के प्रहारा से वेन को मार दिया।

वेन की माता सुनीथा न उसके शव को मन्त्रो (और शायद किसी प्रकार के लेपन) से सुरक्षित रखा। इधर ब्रह्मावत मे फिर दस्युओ क आक्रमण होने लगे। मुनिया को अपने आश्रमो की रक्षा की चिन्ता हो चली।

आखिर मुनियो ने वेन के शव को लेकर पहले उसकी दाहिनी जघा का मन्त्रोच्चारण सहित मन्थन किया। उसस एक नाटे कद का मनुष्य उत्पन्न हुआ जिसकी आकृति बेडौल थी, रग जले हुए खम्भे के समान, आँखें लाल, बाल काले। मुनियो ने उससे कहा—'निषीद' (बैठ जाओ)। इसलिए वह निषाद कहलाया। उसने जन्म लेते ही वेन के सारे पापो को अपने ऊपर ले लिया। उसी के वशधर पवता और बनो मे रहनेवाल निषाद कहलाये।

उसके बाद ऋषि मुनियो ने वेन की दाहिनी भुजा का मन्थन किया। उससे एक दूसरा पुरुष प्रकट हुआ जो देवराज इन्द्र के समान रूपवान था, अस्त्र शस्त्र और आभूषणो स सुसज्जित तेजस्वी और प्रतापी जान पडता था। उसका नाम था पृथु। सूत और मागध (स्तुतिपाठको) न उसका गुणगान करना प्रारम्भ किया। पथु ने उन्हे टोका और कहा कि अभी तो मैंन कोई प्रशसा के योग्य काम नही किया, अभी से मेरा कीर्तिगान कैस?

तदुपरान्त पथु ने ऋषि मुनियों से पूछा कि आप लोगो की मुझे किस प्रकार म सवा करनी है, और किस तरह के प्रयोजनपूण काय करने हैं—यह मुझे बताइय। तब शुक्राचाय आदि मुनिया ने पथु से कुछ प्रतिज्ञाएँ करायी जिनम प्रमुख थी—मन, वाणी और कम से वेद का पालन वेद म की गयी दण्डनीति को चलाना, समस्त प्राणियो के प्रति समभाव रखना परन्तु ब्राह्मणों को दण्ड न देना, समाज को वणसकरता से बचाना इत्यादि।

इन वचना स बँध जाने के बाद ही पृथु मुनियो द्वारा 'राजा घोषित किया गया। पथु ही पहला राजा था—'राजा' यानी जो सब लोकों और

ऊपर इन्द्र का बरसाया हुआ जल सवत्र बना रहे—मेरे भीतर की आद्रता सूखने न पाये।

पथु ने धनुष की कोटि द्वारा चारो ओर ऊँचाइयो को उखाडकर धरनी को समतल किया। इस समतल भूमि म बस्तियो और खेता इत्यादि का विभाजन किया। मनु को बछडा बनाकर अपने हाथो पथु न सत्रह प्रकार के धा या को दुहा। उनके नेतृत्व मे अ य विज्ञजना ने तरह तरह से वसु धरा को दुहकर अभीष्ट वस्तुएँ दुह ली। ऋषियो न वृहस्पति को बछडा बनाकर वाणी इत्यादि के पात्र म वेद को दुहा, दवताओ ने इ द्र का बछडा बना कर सुवण मय पात्र म तीना प्रकार की शक्तियो को दुहा, दैत्य और दानवो ने प्रह्लाद को पात्र बनाकर लोह के पात्र मे मदिरा रूप दूध को दुहा, ग धर्वो और अप्सराओ ने विश्वावसु को बछडा बनाकर कमल रूप पात्र मे सगीत और सौ दय को दुहा। खान, वनस्पति, धातु, तृण—हर तरह की वस्तुआ का धरती मे स दोहन हुआ। सवकामदुहा वसु धरा पृथु के नाम पर ही पथिवी कहलाइ।

इसके बाद पृथु न सौ अश्वमेध यना के अनुष्ठानो मे हाथ लगाया। उनके 99 यन तो पूर हो गय। पर तु सौवें यज्ञ का इ द्र ने पूरा नही होने दिया। उसन पाखण्डी वेश धारण कर अश्वमेध के घोडे का कई बार हरण किया। पथु ने इन्द्र का वध करना चाहा। कि तु ऋषि मुनियो ने परामश दिया कि यन म इ द्र की आहुति देकर उसे भस्म कर दिया जाये। तब ब्रह्मा न पथु को यह कहकर रोका कि राजन आप तो मोक्ष धम के जाननेवाले हैं। आपको यनानुष्ठानो की जरूरत नही है।

कुछ ऐतिहासिक तथ्य और अनुमान

पथु की कथा महाभारत के 'राजधर्मानुशासन पव' मे सक्षिप्त रूप म दी गयी है और भागवत पुराण (चतुथ स्क ध 19वा अध्याय) तथा विष्णु पुराण म उसम अनेक प्रसग जोडकर उसे विस्तत कर दिया गया है। कि तु पथु का उल्लेख ऋग्वेद और अथववेद दोनो मे मिलता है। शतपथ ब्राह्मण म उसे पहले राजा की मना दी गयी है। इ ही उल्लेखो का महा भारत और पुराणो मे सिलसिलेवार आख्यान का रूप दिया गया है।

पथु की कथा म निपाद और सरस्वती की चर्चा जिस ढग से की गयी है उसका अनुसन्धान करत करत मुझे दो तथ्य मिले। एक तो यह कि निपाद शब्द ब्राह्मण या क्षत्रिय पिता और शूद्र माता स उत्पन्न सन्तान के लिए प्रयुक्त होता रहा है।

कवप नामक निपाद का ऋग्वेद और ऐतरेय ब्राह्मण म उल्लेख है। ऋग्वेद के दशम मण्डल मे कवप के नाम से जल की स्तुति म कई सूक्त हैं। कवप ईलूप का एक दासी स उत्पन्न पुत्र था। ऐतरेय ब्राह्मण के अनुसार सरस्वती तट पर जब कुछ ऋषि यज्ञ कर रहे थे तब कवप भी उन लोगो के साथ था। किन्तु चूकि वह दासी पुत्र था इसलिए मुनियो ने उसे अपने आश्रम से निकाल दिया। निर्वासित निपाद—कवप—रेगिस्तान को चला गया। वहाँ उसन सरस्वती की स्तुति की जिसके फलस्वरूप रेगिस्तान म ही सरस्वती का जल उसके चारो ओर प्रकट हो गया। जब ऋषियो न निपाद की स्तुति की महिमा देखी तो उन्होंने अपने आश्रम और यज्ञो मे उसे शामिल कर लिया।

दस्युओ का जिक्र ऋग्वेद मे अनेक बार आया है, उन नगरो के सिल-सिले मे जिनके विनाश के लिए ऋग्वेद के आय बार-बार इन्द्र तथा अन्य देवताओ स प्राथना करते हैं। हाल ही म सरस्वती की धारा जिस घाटी मे होकर बहती थी उसके किनारे हडप्पा सभ्यता के अवशेप मिले है जिनम प्रमुख हैं राजस्थान म सूरतगढ के निकट कालीबगा म हडप्पा-मोहनजोदडो के समान ही एक नगरी से ध्वसावशेप। मैंन उन ध्वसावशेपो को देखा है और ऊँचे टीलो पर खडे होकर सरस्वती की धारा के लुप्त होने के कारणो का अनुमान भी किया है—कैसे ऊपर से बहकर आयी हुई मिट्टी न सरस्वती की धारा को अवरुद्ध किया होगा और क्रमश कालीबगा की नगरी का ह्रास होता गया होगा। उत्खनन अधिकारी श्री थापर ने एक दिलचस्प तथ्य मुझे बताया। भूविशेपज्ञो न सरस्वती की सूखी धरती म मिट्टी की जाच करके अनुमान किया है कि प्राचीन सरस्वती म एक और धारा मिलती थी जिसका यमुना की धारा से भी सम्बन्ध था। यही शायद वह दपद्वती थी जो बाद मे यमुना की ओर मुड गयी और सरस्वती को उसका जल मिलना बन्द हो गया। यह भी सरस्वती के सूख जाने का कारण था।

सरस्वती के रेगिस्तानी क्षेत्र मे कालावगा इत्यादि स्थानो मे उजडती हुई बस्तियो के निवासी ही तो वे दस्यु नही थे जो सरस्वती के ऊपरी तट पर स्थित आयमुनियो के आश्रमो पर हमला करते थे ? उन 'दस्युआ मे मातपूजा प्रचलित थी। हडप्पा मोहजोदडो मे प्राप्त मिट्टी की मुद्राओ इत्यादि से इसकी पुष्टि होती है। एक मुद्रा मे भूमिदेवी की कुक्षि मे से एक वक्ष निकलता दिखाया गया है—पथिवी का शस्योत्पादक का रूप। मातपूजा परवर्ती आय जीवन मे घुल मिल गयी कितु उसके आदि-स्वरूप की भाकी अब भी राजस्थान ही के भीलो की बनायी उन विचित्र और कभी कभी वीभत्स मूर्तियो मे मिलती है जिनकी वे लोग आज भी आराधना करते है। (इन मूर्तियो का एक आवपक सग्रह उदयपुर के भारतीय लोककला मण्डल मे द्रष्टव्य है।) राजस्थान ही म माता (अम्बा) की आराधना के समय आराधक अथवा आराधिका पर देवी के चढने की प्रथा और तत्सम्बधी सगीत और नृत्य अक्सर देखन को मिलते हैं।

यह भी जान पडता है कि उन दिना (शायद ईसवी पूव 16वी 12वी शताब्दिया के आसपास) तीन प्रकार के युगा तरकारी परिवतन आर्यों के जीवन मे हुए। पहला परिवतन हुआ उनकी राजनीतिक व्यवस्था मे। सत्ता मुनियो और ब्राह्मणो के हाथ म थी, कितु अपन आश्रमो की रक्षा के लिए, अपने यज्ञ-अनुष्ठाना की पूर्ति के लिए उन्होने कबीलो के सरदारो को शासको के रूप मे मजूर किया। प्रारम्भ म शासक की सत्ता और अधिकारो की रूपरेखा निश्चित न थी। मुनियो और ब्राह्मणो मे सघप हुए। शासक हटे भी किसी-किसी का वध भी हुआ। अतत शासक को राजा का स्वरूप दिया गया और मुनियो और ब्राह्मणो से राजा का सम्बध कुछ निर्धारित कतव्यो (यानी राजधम) के आधार पर निश्चित हुआ। इन सम्बधो को ही बाद मे शुक्रनीति की सज्ञा दी गयी।

दूसरा महान् परिवतन था आर्यों का भारत की प्राचीन आर्येतर जातियो से सम्पक और उन्हे अपने समाज मे या समाज के इद गिद स्थान देना। हडप्पा मोहजोदडो सभ्यता की जातिया के अतिरिक्त भारत मे अनक अय जातियाँ भी थी। आर्यों ने कुछ समुदायो को ज्या-का त्यो ग्रहण

किया, कुछ की स्त्रियों से वर्णसंकर सन्तान उत्पन्न कर उन्हें नये किन्तु प्रायः निम्नवर्ग की मान्यता दी, और कुछ को समाज से सर्वथा बहिष्कृत किया। अनेक वाद विवाद हुए, खास तौर से वर्णसंकरता की समस्याओं को लेकर। 'निषाद' नाम ही उस वर्णसंकर सन्तान के लिए इस्तेमाल किया गया जिसका पिता आर्य और माता अन्य जाति की थी। मातृपूजन तथा तरह तरह के रीति रिवाजों, उत्सवों और पद्धतियों का भी आर्यों के समाज में समावेश हुआ। नाना प्रकार के सम्बन्धों और प्रयोगों को 'लेजिटिमिटाइज' करना (विधिवत रूप देना) आसान काम न था। इस प्रक्रिया से जहां एक ओर आर्यसमाज में कुछ विविधता आयी वहां आर्य मनोवृत्ति में जड़ता का भी प्रवेश हुआ।

तीसरी महत्त्वपूर्ण बात थी जमी हुई खेती, बस्तियों और नागरिक सभ्यता के प्रति आर्यों की प्रतिक्रिया और उस तरह के जीवन को क्रमशः अंगीकार करना। आर्य लोग पशुपालन के अभ्यस्त थे और नित्य नये चरागाहों की खोज में ही उन्हें मानव जीवन की प्रगति के आभास दीखते थे। प्रारम्भ में उनकी खेती का तरीका भी आजकल की नागा तथा कुछ आदिवासी जातियों की झूम पद्धति से मिलता जुलता था यानी जंगलों को यथावश्यक जलाना, कुछ बरस पैदावार करना और जब भूमि बंजर हो जाय तो उसे छोड़कर फिर नये जंगल काटना। जंगलों में चरागाहों की खोज करने-वाले आर्यों की यह पद्धति भारत के घने जंगलों में अपनाना कोई आश्चर्य की बात नहीं थी। लेकिन देश के कुछ भागों में इस पद्धति का प्राचीन निवासियों (यानी हड़प्पा मोहनजोदड़ो सभ्यता के समुदायों) ने रेगिस्तान के बीच नदी घाटियों में खेती की हरियाली और वाणिज्य का उसी भांति विकास किया था जैसे उनकी समकालीन दजलाफरात और नील नदी की घाटियों की जातियों ने किया था। आबपाशी के तरीके और धरती की उर्वरा शक्ति का संचय उनके लिए अनिवार्य थे, पर आर्यों के लिए नये। क्या आर्यों की जंगल जलाने की पद्धति के कारण ही सरस्वती नदी सूखी चली गयी? सम्भव है ऐसा हुआ हो। सम्भव है इसी कारण कुछ अकाल भी पड़े। शायद ऐसा भी हुआ और जंगल जलानेवाले ऋषि मुनियों के समान को धरती की उपज और विभिन्न सम्पदाओं के विकास के लिए नये तरीके भी

अपनान पडे।

जिस व्यक्ति ने धरती का या विकास किया, उसकी सम्पदाओ के उपयोग की व्यवस्था की, उसे समतल कर उसकी उवरा शक्ति का सचय किया, उसका नाम, महाभारत और पुराणो के अनुसार 'पृथु' था।

पथु वास्तव म एक प्रतीक रहा होगा उन तीनो युगा तरकारी परिवतनो का जिनका ऊपर उल्लेख किया गया है। पथु और 'पथवी' शब्दा म पहले किसकी कल्पना हुई यह अनिश्चित होते हुए भी यह तो स्पष्ट ही है कि पुराणकारो न कही तो पथवी को पथु की कन्या, कही उसकी सहचरी पत्नी और कही उसकी माता का स्वरूप देकर उस व्यवस्था की ओर सकेत किया जिसन आयजीवन और भारतभूमि की काया पलट कर दी।

विशेष टिप्पणिया

विशेष जिज्ञासु पाठको के मनोरजनाथ मैं नीचे टिप्पणिया मे नाटक के कुछ ऐसे प्रसगो की आधार सामग्री का उल्लेख कर रहा हूँ जिनके बारे म साधारणतया कुछ स देह उठ सकता है।

कुशा की रस्सी और हुकारो द्वारा वेन का वध महाभारत मे (राजधमानुशासनपव) श्लोक है 'त प्रजासु विधर्माण' रागद्वेष के वशीभूत होकर प्रजाओ पर अत्याचार करने लगा। तब वेदवादी ऋषियो न म त्रपूत कुशो द्वारा उसे मार डाला। श्रीमदभागवत म यद्यपि कुशा का जिक्र नही है, तथापि ऋषिया के कुपित होकर वेन को मार डालने की घोषणा का स्पष्ट उल्लेख है "इत्य व्यवसिता ह तुमषयो रूढम यव। निजघ्नुहुकृतैर्वेन हयमच्युतनि दया।।' (चतुथ स्क द। अध्याय 14)। इस प्रकार अपने छिपे हुए क्रोध को प्रकट कर उ होंने उसे मारने का निश्चय कर लिया। वह तो भगवान् के नि दा के कारण पहले ही मर चुका था इसलिए केवल हुकारो से ही उ होन उसका काम तमाम कर दिया। एक और भी श्लोक है जिसम मुनि लोग "ह यया ह यतामेष पाप प्रकृतिदारुण' (मार डालो, इस स्वभाव से ही दुष्ट पापी को मार डालो) चिल्लाते हुए अपने क्रोध को प्रकट करते है।

इस प्रकार की हुकारों और वतमान नारेबाजी और आ दोलनो म मुझे

काफी साम्य दीख पडा। 'मन्त्रपूत कुशाओ के वध से तो स्पष्टत रस्सी द्वारा गला घोटने अथवा कुशाओ के आघातो द्वारा हत्या का ही तात्पय हो सकता है।

वेन के शव का सुनीथा द्वारा सरक्षण श्रीमदभागवत मे कहा गया है "गत पुनक्लेवरम सुनीथा पालयामास विद्यायोगेन शावती (शोकाकुला सुनीथा विद्या और युक्ति के बल से अपन पुत्र के शव की रक्षा करने लगी)। यह कौन सी विद्या और कौन सी युक्ति थी जिसके द्वारा सुनीथा ने वन के शव को सडने गलने से बचा लिया? सुदूर मिस्र मे उन्ही दिना और उससे पूव मतक की देह पर एक अदभुत लेपन द्वारा उसे सुरक्षित रखने की विधि चालू थी। मिस्र के पिरामिडा म प्राप्त हजारा 'ममी इसके सबूत है। क्या भागवतकार उसी प्रकार की किसी विधि की ओर सकेत करता है? सुनीथा को मत्यु' की कन्या कहा गया है। क्या इसके अथ हैं कि वह किसी और देश की कन्या थी जहा उसन ऐसी विधियो को सीखा?

देह मन्थन, जघापुत्र, भुजापुत्र ऋषि मुनिया द्वारा वेन की जघा का मन्थन और उसम से एक कालेकुरूप और नाटे कद के व्यक्ति का निकलना इस कथा मे वस्तुत वेन की किसी जारज, वणसकर सन्तान की ओर सकेत है। जाघ के मन्थन से कोई आशय नही हो सकता। वेन का किसी आर्येतर कन्या से सम्बन्ध रहा होगा और उसकी सन्तान आय मुनिया को अस्वीकाय रही होगी। उसे अपन अधिकार से वचित करन के लिए वेन की सन्देह के मन्थन की युक्ति सोची गयी और यो एक आयकुल के वीर को वन का भुजापुत्र घोपित कर राजा के रूप म प्रतिष्ठित किया गया। "ममन्थुदक्षिण चाम्मपयस्तस्य म वत। ततोऽस्य विकृतो जने ह्रस्वाग पुरुषो भुवि। तथा 'भूयोऽस्यदक्षिण पाणि ममन्थुस्त महषय। तत पुरुष उत्पन्नो रूपणेन्द्र इवापर।' —महाभारत के य दा श्लोक तथा इसी प्रकार पुराणा मे जघा और भुजा के म थन की प्रक्रिया के वणन, तत्कालीन वणसकरता की समस्या को ब्राह्मण ग्रन्थकारा द्वारा छदम रूप म प्रस्तुत करन के तरीके है।

निषाद, कवष, मरस्थल मे कवष द्वारा सरस्वती का आह्वान डाउसन

की क्लासिकल डिक्शनरी के अनुसार, निषाद शब्द पर्वतों और जंगलों में रहनेवाली जातियों के लिए भी प्रयुक्त होता है और ऐसे जाति बहिष्कृत व्यक्ति के लिए भी जिसका पिता द्विज जाति का हो और माता शूद्र। वेन की जांघ से उत्पन्न निषाद ही उनका पूर्वपुरुष माना गया है— 'तस्मात् निषादा सम्भूता क्रूरा शैलवनाश्रया। (महाभारत)।

महाभारत और पुराणों में कवष की कथा का वेन और पृथु की कथाओं से कोई सम्बन्ध नहीं है। कवष का उल्लेख ऐतरेयब्राह्मण में है। वह दासीपुत्र था। ऋग्वेद में उसके पिता का नाम ऐलूष कहा गया है। सरस्वती तट पर उसने ऋषि मुनियों के साथ यज्ञ में हिस्सा लेना चाहा पर दासीपुत्र होने के कारण उसे सरस्वती के जल से आचमन करने की अनुमति नहीं मिली। तब रेगिस्तान में जाकर उसने तप और स्तुति की सरस्वती का जल वहीं अवतीर्ण हुआ। इस सिलसिले में ऋग्वेद के दशम मण्डल में कवष के नाम से मन्त्रों के नमूने इस प्रकार हैं धनशाली जल, मेरा आह्वान सुनो। मेरे आह्वान में यज्ञ के लिए घृतदान किया जाता है और तुम्हारा स्तोत्र किया जाता है।—सब प्रकार का जल आ रहा है। यह धन का आधार और जीव के लिए हितप्रद है।

कवष ने मरुस्थल में जाकर सरस्वती के जल का आह्वान किया और जल वहां प्रकट हुआ—इस प्रसंग में शायद रेगिस्तान तक सरस्वती के जल को किसी प्रकार की नहर द्वारा ले जाने के प्रयास का संकेत है। कालीबंगा के पास मरुभूमि के निकट सरस्वती की सूखी धारा को देखकर मुझे इस संकेत का आभास हुआ। इसीलिए मैंने इस नाटक में वेन के जंघापुत्र निषाद और सरस्वती के जल को प्रकट करनेवाले दासीपुत्र कवष को एक ही व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत किया है।

विज्ञ पाठकों को यह बताने की जरूरत नहीं कि नाटक में कवष पृथु के अधूरे पुरुषार्थ का अभीष्ट खण्ड है, एक ही व्यक्तित्व के दो खण्ड जो अंततः एक दूसरे की प्रतिध्वनि मात्र रह जाते हैं।

सरस्वती पार के डाकू ऋग्वेद में दस्युओं और पणियों, दोनों को आर्यविरोधी कहा गया है। ये लोग गाय चुरानेवाले और यज्ञविध्वंसक कहे गये हैं। इन डाकुओं और उन असुरों राक्षसों में जिनके नगरों का इन्द्र

ने विनाश किया, कोई सम्बन्ध था या नहीं यह बात ऋग्वेद में स्पष्ट नहीं है। श्रीमदभागवत में बराबर कहा गया है, सरस्वती तट पर आश्रमों में रहनेवाले मुनिवृन्द दस्युओं से त्रस्त रहते थे। जब वेन जैसा कठोर शासक ब्रह्मावर्त में सत्तारूढ हुआ तब ये डाकू लोग सर्प के डर से भयभीत चूहों की भांति छिप गये— निलित्युर्दस्यवः सद्यः सर्पत्रस्ता इवाखवः। ' लेकिन जब वेन मर गया और कोई अंकुश रखनेवाला न रहा तो पुनः इन डाकुओं का आतंक फैल गया और ऋषियों ने सब दिशाओं से धावा करनेवाले डाकुओं के कारण उठी हुई भारी धूल देखी—एवं मृशन्त ऋषयो धावतां सर्वतोदिशम्। पांसुः समुत्थितो भूरिश्चोराणामभिलुम्पताम्।'

वे कौन पुर या नगर थे जिनका आर्यों और उनके नेता इन्द्र ने विनाश किया—इस प्रश्न का अनेक विद्वानों ने समाधान करने की चेष्टा की है। मैंने हड़प्पा सभ्यता से पराजित नागरिकों को ही आर्यों का शत्रु माना है, सरस्वती की घाटी में कालीबंगा तथा लगभग अठारह अन्य स्थानों में उस प्राचीन सभ्यता के अवशेषों की प्राप्ति के बाद यह स्पष्ट हो गया है कि आर्यों के आने से पहले सिन्धु, रावी और सरस्वती के तटों पर एक नागरिक सभ्यता लहलहा रही थी जिसे शायद आर्यों ने नष्ट किया। बचे खुचे लोग भी विनम्र होकर डाकूवृत्ति की ओर उन्मुख हुए। अन्ततः आर्यों की सभ्यता में उस नागरिक सभ्यता के अनेक तत्त्व और रूप समाविष्ट हो गये।

शुक्राचार्य, अत्रि, गर्ग इत्यादि महाभारत के अनुसार शुक्राचार्य ने नीतिशास्त्र को एक हजार श्लोकों में संक्षिप्त किया—"अध्यायानां सहस्रेण काव्यः संक्षेपमब्रवीत। तच्छास्त्रममितप्रज्ञो योगाचार्यो महायशाः।' इस उल्लेख के बाद उसी राजधर्मानुशासन पर्व में पृथु के प्रथम राजा बनाये जाने का विवरण है। उस विवरण का दृष्टव्य अंश वह है जहाँ ऋषि मुनि पृथु से राजनीति, दण्डनीति और राजा के कर्तव्यों के बारे में कुछ प्रतिज्ञाएँ कराते हैं। मैंने उन प्रतिज्ञाओं को बहुत-कुछ महाभारत ही के शब्दों में नाटक में शामिल किया है और उन्हें एक तरह से संविधान का स्वरूप दिया है। जब ये प्रतिज्ञाएँ पृथु ने कर ली तभी वे राजा बने और ऋषियों ने 'एवमस्तु' कहकर उन्हें आशीर्वाद दिया। नीतिकार शुक्राचार्य इस अनुष्ठान के नेता थे। इसका सबूत यह है कि तुरन्त ही पृथु ने उन्हें

अपना पुरोहित बनाया, तथा गग, बालखिल्यादि मुनियो को अन्य पद प्रदान किये—"एवमस्तित्वति वैन्यस्तु तैसक्तो ब्रह्मवादिभि । पुरोधाश्चाभवत् तस्य शत्रो ब्रह्मयो निधि । मन्त्रिणो बालखिल्याश्च सारस्वरयो गणस्तथा। महर्षिभगवान् गगस्तस्य सावत्सरोऽभवत ।

शुक्राचाय के अतिरिक्त पथु की कथा मे अत्रिमुनि का जिक्र श्रीमद-भागवत म विशप तौर से किया गया और यह दिखाया गया है कि जब इन्द्र ने पथु के अश्वमेध यज्ञ म बाधा डाली तब अत्रि ने ही पृथु को इन्द्र का मुकाबला करने के लिए प्रेरित किया। अत्रि प्रेरक और उदबोधक के रूप मे इन कथाओ म प्रस्तुत किये गये है और इसीलिए मैंने उनमे आधुनिक वाग्वीर नेताओ स कुछ साम्य पाया। शुक्राचाय उनकी अपेक्षा कूटनीतिज्ञ और अधिक दूरदर्शी जान पडे। भगुवश और आत्रेयवश की पारस्परिक स्पर्धा का प्रसग मैंने वशिष्ठ और विश्वामित्र की सुविदित स्पर्धा के अनुसार गढा है। मनगढन्त होते हुए भी इस तरह की स्पधा आश्रमा के बीच मुझे स्वाभाविक जान पडी। पार्टीबाजी नितान्त आधुनिक समस्या नही है, मुनियो के बीच इस तरह की दुभावना अपनी शक्ति और प्रभाव का जनता मे कायम रखने के लिए यदा-कदा उठनी रही हो इसम कोई आश्चय की बात नही।

नाटक म जिस तरह बाध के काम मे ढील डालने का स्वार्थवश कुचक्र दिखाया गया है वह एक सत्य घटना पर आधारित है। मेरी जानकारी मे कुछ वष हुए, बाढ को रोकने के लिए एक बाध की मरम्मत मे एक स्थानीय नेता के दुराग्रह पर इसीलिए ढील ढाल दी गयी कि अगर अधिक मजदूर भेजे जाते तो उन स्थानीय नेता की पार्टी के मजदूरो के वेतन मे कमी हो जाती।

सूत और मागध सूत और मागध न पथु के प्रगट होते ही उनका स्तुतिगान किया और उनसे प्रसन्न होकर पृथु ने उन्हें अनूप प्रदेश प्रदान किया। यह प्रसग महाभारत म आता है किन्तु श्रीमद्भागवत मे इसका अधिक मनोरजक रूप है। जब इन दोनो न पथु की प्रशसा करनी प्रारम्भ की तो पथु ने उन्ह टोका। "वय त्वविदिता लोके सूताद्यापि वरीमभि । कमभि कथमात्मान गापयिष्याम बालवत् ।"

मैंने सूत मागध की तुलना आजकल के प्रचारक और विज्ञापन करनेवालों से की है। यों तो प्राचीन ग्रन्थों में स्तुतियों और प्रशंसाओं की सर्वत्र ही भरमार है किन्तु किसी व्यक्ति ने इस तरह के प्रशंसकों को यह कहकर रोका हो कि बिना अवसर के चापलूसी करना गलत है ऐसा प्रसंग मुझे अन्यत्र नहीं दीखा।

अर्चि, अर्चना पृथु की पत्नी कैसे और कहाँ से आयीं इस बारे में महाभारत और पुराणों की कथाओं में सूत्र मुझे नहीं मिल पाया। श्रीमद्-भागवत में इतना ही कहा गया है कि जिस समय वेन की दाहिनी भुजा से पृथु उत्पन्न हुए उसी समय सब अलंकारों से सुशोभित उनकी रानी भी उपस्थित हो गयी। मैंने अर्चि को एक आश्रम कन्या और गर्ग मुनि की गोद ली हुई पुत्री के रूप में प्रस्तुत किया है। इस तरह की आश्रम कन्याओं के प्रसंग तो प्राचीन आख्यानों में अनेक हैं जिनमें शकुन्तला का प्रसंग सुविख्यात है।

उर्वी, धरती, पृथ्वी पृथु की कथा का विलक्षण प्रसंग है धरती का पृथु को उद्बोधन। धरती गाय का रूप लेकर पृथु से त्राण लेने के लिए भागी और अन्ततः कातर होकर उसके सामने प्रस्तुत हुई और तब उसने उसे बताया कि क्यों वह अपना धन, सम्पदा और बीज बाहर नहीं ला रही। यह प्रतीक कथा निराली है। पहले तो मैंने इस प्रसंग को स्वप्नदृश्य के रूप में प्रस्तुत करने का विचार किया। किन्तु जब महाभारत और पुराण स्वयं कहते हैं कि पृथु ने धरती को समतल किया और खेती बाड़ी की समुचित योजना बनायी और विभिन्न प्रकार से पृथ्वी की सम्पदा का उपयोग करने का अनुष्ठान किया तो मुझे लगा कि स्वप्न दृश्य की अपेक्षा किसी पात्र को प्रतीक के रूप में प्रस्तुत करना अधिक समीचीन होगा।

उर्वी शब्द का अर्थ भी धरती ही है। यह पात्र यथार्थ और प्रतीक, कर्म और कल्पना इन दो ओर छोर के बीच में विहरता है। उर्वी धरती की आत्मा है। उर्वी पुरुषार्थ को चुनौती है। उर्वी लोकजीवन की अन्तरध्वनि है।

इसलिए उर्वी ही के माध्यम से मैंने लोकगीतों की तान पकड़ने की चेष्टा की (सोने की थाली और दमकती हुई कटोरिया के बिम्ब पर एक मैथिली

गीत की छाप है) तथा भूचण्डी या दवी की उन्माद लीला और धरती के दोहन का चित्र प्रस्तुत किया।

पथु पृथु के कुल के विषय मे मैंने अनुमान किया है कि वह हिमालय म व्यास और सतलज की घाटिया के बीच त्रिगत और कुलूत (जिसे आजकल कागडा और कुल्लू कहत है) के किसी आयकुल से आया था और वन के बाद शासक की तलाश करनेवाले मुनियो ने उसमे शासकोचित गुण देखकर उसे वेन का भुजापुत्र घोषित किया। डॉ वासुदवशरण अग्रवाल ने अपन भारत सावित्री' और भारत की मौलिक एकता' ग्रथो म त्रिगत का उल्लेख किया है। उनके अनुसार कांगडा-कुल्लू का इलाका पौराणिक भूगोल का पवताश्रयी प्रदेश था। यहां के जनपदा मे त्रिगत अथात् रावी व्यास सतलज— इन तीन नदी घाटिया का समस्त प्रदश मुख्य था। उन्हान कुलूत के देवप्रस्थ वश का भी उल्लेख किया है। उसके निकट ही किन्नरा का निवास था जिनम अनेक प्रकार के उत्सवो और मेलो की परम्परा थी।

पुराणो म पृथु की एक दढसकल्प, सत्यप्रतीक, महान विजेता ब्राह्मण भक्त शरणागत वत्सल और दण्डपाणि अवतारी पुरुष के रूप मे प्रतिष्ठा हुई है। लेकिन इससे भी अधिक महत्त्वपूण और प्रामाणिक है उत्पादन बढानेवाला उसे समतल कर उसकी आद्रता का सवधन करनेवाला, कृषि [और सिंचाई और भूविभाजन का प्रमुख नेता पथु। महाभारत, पुराण शतपथ ब्राह्मण इत्यादि म इस पथु का स्पष्ट विवरण है और मुझे इसी पथु न आकष्ट किया।

लेकिन नाटक म पृथु कुछ और भी है। वह विभिन्न दुविधाओ और खिचावा का बिन्दु है। हिमालय का पुत्र जो प्रकृति की निश्छल क्रोड मे खो जाना चाहता है आय युवक जो पुरुषाथ और शौय का पुज है, निषाद, किन्नर एव अन्य आर्येतर जातिया का बन्धु जो एक समीकृत सस्कृति का स्वप्न देखता है, दारिद्रय का शत्रु और निर्माण का नियोजक जिसे चक्रवर्ती और अवतार बनने के लिए मजबूर किया जाता है। मैं और सकेत नही दूगा कि वह कौन है।

सूत्रधार और नटो 'कोणाक' म 'वन्दवार्तिक' को मैने कथानक की

धूव भांकी दनेवाले और प्रसगा के बीच कडी के माध्यम के रूप म प्रस्तुत किया था। 'पहला राजा के 'सूत्रधार और नटी मे यूनानी कोरस, असमिया अकियानाट के सूत्रधार और सगी, तथा पुराण महाभारत क वैशम्पायन, सूत और शौनक—सभी का थोडा बहुत पुट है। उनक सवादा म किसी प्रकार की समनुरूप दशन—कसिस्टट फिलॉसफी—खोजना वकार होगा। अनेक दपणखण्डो की भाति बिखरे उनके सवाद जहा तहां पात्रो के अ तस्तल की झाँकी भर दत ह। उनकी प्रासगिकता इतनी स्थूल नहीं ह जितनी अ तर्वाहिनी।

●●●

जगदीशचन्द्र माथुर

जन्म 16 जुलाई, सन 1917, खुरजा (उ प्र)।

निधन 14 मई 1978

शिक्षा प्रारम्भिक पढाई खुर्जा म। उच्च शिक्षा का क्षेत्र इलाहाबाद। एम ए करने के बाद 1941 म आई सी एस की परीक्षा पास की।

आजीविका इंडियन सिविल सर्विस के सदस्य क रूप म बिहार राज्य के शिक्षा सचिव, आकाशवाणी क महानिदेशक सूचना प्रसारण मन्त्रालय के सयुक्त सचिव तिरहुत (बिहार) डिविजन के आयुक्त, कृषि म त्रालय म अतिरिक्त सचिव और गहम त्रालय म हिन्दी सलाहकार आदि पदो पर काय। 1963-64 म हावड विश्वविद्यालय के विजिटिंग फलो रह।

कृतित्व कोणाक, शारदीया, पहला राजा (नाटक), ओ मरे सपने, भार का तारा, मकडी का जाला (एकाकी) दस तस्वीरें, जिन्हान जीना जाना (जीवनिया) बोलत क्षण (निब ध सग्रह) तथा डामा इन रूरल इण्डिया यू लैम्पस फार अलादीन और एडल्ट एजूकेशन फार फामम नामक पुस्तकें विशेष महत्त्वपूण।

श्री माथुर इण्डियन जनरल आफ एडल्ट एजूकेशन के अवतनिक सम्पादक तथा भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार योजना की प्रवर परिषद के सदस्य रह। नाटय क्षेत्र म उल्लखनीय योगदान के लिए 'बिहार राष्टभाषा पुरस्कार' तथा 'कालिदास पुरस्कार' स भी सम्मानित किया गया।